INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान महिला ASI 2023

(सहायक उपनिरीक्षक)

HANDWRITTEN NOTES

PART-3 राजस्थान का भूगोल + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

महिला ASI

(सहायक उपनिरीक्षक)

भाग – 3

राजस्थान का भूगोल + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान महिला ASI (सहायक उपनिरीक्षक)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान महिला ASI (सहायक उपनिरीक्षक)**" **की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* ***/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/2iclos

Online order करें - https://bit.ly/asi-woman

मूल्य : ₹	***संस्करण : नवीनतम***

राजस्थान का भूगोल

1. सामान्य परिचय	1
2. राजस्थान का अपवाह तंत्र : नदियाँ एवं झीलें	36
3. राजस्थान की नदी घाटी परियोजनाएँ	59
4. राजस्थान की जलवायु	65
5. मृदा संसाधन	76
6. वन संपदा एवं वन्य जीव अभ्यारण्य	81
7. राजस्थान में कृषि	91
8. राजस्थान में खनिज संसाधन	105
9. जनसंख्या – वृद्धि, घनत्व, साक्षरता एवं लिंगानुपात	119
10. प्रमुख उद्योग	130
11. जैव विविधता एवं इनका संरक्षण	134

राजस्थान की राजव्यवस्था

1. राज्यपाल	141
2. मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्	149
3. राज्य विधान सभा	157
4. उच्च न्यायालय	167
5. राजस्थान लोक सेवा आयोग	175
6. राजस्थान में जिला प्रशासन	176
7. राज्य मानवाधिकार आयोग	181
8. लोकायुक्त	183
9. राज्य निर्वाचन आयोग	186

10. राज्य सूचना आयोग	187
11. महिला एवं बाल अपराध	190
राजस्थान की अर्थव्यवस्था	
1. वृहद् आर्थिक प्रवृतियों का परिदृश्य	201
2. कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र	202
3. राजस्थान में औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र	210
4. अभिवृद्धि, विकास एवं नियोजन	221
5. गरीबी एवं बेरोजगारी	228
6. विभिन्न कल्याणकारी योजनाएँ	235

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – 1

सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, राजस्थान के भूगोल का अध्ययन करने के लिए हम इसे दो भागों में विभाजित करेंगे-

1. सामान्य परिचय

2. भौतिक स्वरूप

1. सामान्य परिचय -

प्रिय छात्रों, सामान्य परिचय के अंतर्गत हम राजस्थान के निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे-

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख

(ख) राजस्थान की स्थिति

(ग) राजस्थान का विस्तार

(घ) राजस्थान का आकार

(ङ) राजस्थान की आकृति

2. भौतिक स्वरूप -

इसी प्रकार भौतिक स्वरूप के अंतर्गत हम निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे –

(क) पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

(ख) अरावली पर्वतीय प्रदेश

(ग) पूर्वी मैदानी प्रदेश

(घ) दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

1. राजस्थान का परिचय

राजस्थान शब्द का अर्थ :- राजाओं का स्थान

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख :-

- राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।
- मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक **"मुहणोत नैणसी"** ने भी अपनी पुस्तक "नैणर्सी री ख्यात" में भी **राजस्थान शब्द का प्रयोग** किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता ।

महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है ।

जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सन् 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को **"राजपूताना"** शब्द कहकर पुकारा था । इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक "मिलिट्री मेमोरीज ऑफ़ मिस्टर थॉमस" में किया है ।

जॉर्ज थॉमस का परिचय :-

- जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे, जो कि 18 वीं. सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे ।
- इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन् था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।

विलियम फ्रैंकलिन :-

- विलियम फ्रैंकलीन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ट मित्र थे। उन्होंने 1805 ई. में जॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।
- अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार **"अबुल फजल"** ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए **"मरुभूमि"** शब्द का प्रयोग किया है।
- 1829 ईस्वी में **"कर्नल जेम्स टॉड"** ने अपनी पुस्तक **"एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान"** में सर्वप्रथम राजस्थान को रायथान, रजवाड़ा" या राजस्थान का नाम दिया था।

कर्नल जेम्स टॉड :-

- कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1822 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे ।
- कर्नल जेम्स टॉड ब्रिटेन के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें **घोड़े वाले बाबा** के नाम से भी जाना जाता है।

- कर्नल जेम्स टॉड को **"राजस्थान के इतिहास का पितामह"** कहा जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को "सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" के नामक से भी जानते हैं।
- इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "गौरीशंकर -हरीशचंद्र ओझा" ने किया था। इसे हिंदी में "प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण" कहते हैं।
- कर्नल टॉड सर्वेक्षण के सिलसिले में अजमेर और उदयपुर में कई जगह पर रहे थे- उनमें भीम नामक कस्बे में छोटा सा गाँव बोरसवाडा भी था- जो जंगलों और अरावली-पहाड़ों से घिरा हुआ है।
- उन्हें यह जगह पसंद आई तो उदयपुर के महाराजा भीम सिंह की सहमति से स्वयं के लिए बोरसवाडा में एक छोटा सा किला बनवा लिया।
- महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गाँव का नाम टॉडगढ़ रख दिया, जो कालान्तर में टाडगढ़ कहलाने लगा। टाडगढ़ वर्तमान में अजमेर जिले की एक तहसील का मुख्यालय है।
- कर्नल टॉड के किले में वर्तमान में सरकारी स्कूल चलता है

(ख) <u>राजस्थान की स्थिति</u>:- प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे ।

(1) राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" पर:- पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा –

(क) अंगारा लैंड / यूरेशियल प्लेट

(ख) गोंडवाना लैंड प्लेट

(ग) टेथिस सागर

(घ) पेंजिया

(ङ) पेंथालासा

नोट:- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि – आज से लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी दो भागों में विभाजित थी ।

1. स्थल

2. जल

- जैसा कि आज भी दिखाई देता है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखें तो हमें यह कई भागों में विभाजित दिखाई देता है, जैसे सात महाद्वीप अलग - अलग हैं ।
- उनके भी कई देश एक - दूसरे से काफी अलग अलग है । लेकिन लाखों – करोड़ों वर्ष पूर्व संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था ।
- इसी **स्थलीय क्षेत्र को "पेंजिया"** के नाम से जानते थे तथा शेष बचे हुए भाग को **(जल वाले क्षेत्र को) "पेंथालासा"** के नाम से जानते थे ।
- नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-

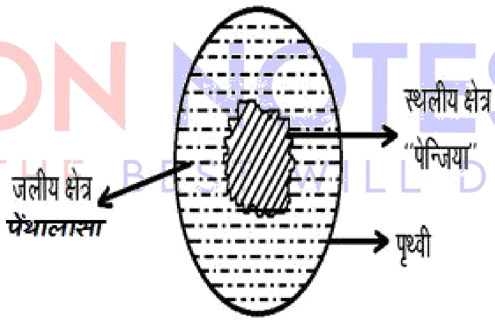

पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पेंजिया (स्थलीय क्षेत्र) दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ । इस **स्थलीय क्षेत्र को "अंगारा लैंड /यूरेशियन प्लेट"** के नाम से जानते हैं।

इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को **"गोंडवाना लैंड"** 'प्लेट' के नाम से जानते हैं।

- दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।
- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-

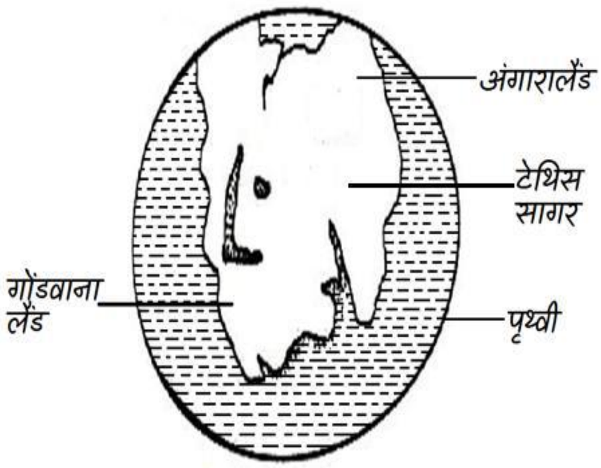

विशेष नोट:- *राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीलें "टेथिस सागर" के अवशेष है तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वतमाला) एवं दक्षिण पूर्वी पठारी भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से हैं।*

टेथिस सागर- *टेथिस सागर को गोंडवाना लैंड प्लेट और यूरेशियन प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है जो कि एक छिछला और संकरा सागर था, और इसी में जमा अवसादों के प्लेट विवर्तनिकी के परिणाम स्वरुप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।*

*प्रिय छात्रों, अब तक हम अंगारा लैंड, गोंडवाना लैंड, टेथिस सागर, पेंजिया तथा पैंथाल्सा का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर चुके हैं। अब हम **पृथ्वी पर राजस्थान की** स्थिति, का अध्ययन करते हैं। नीचे दिए गए मानचित्रों को ध्यान से समझिए-*

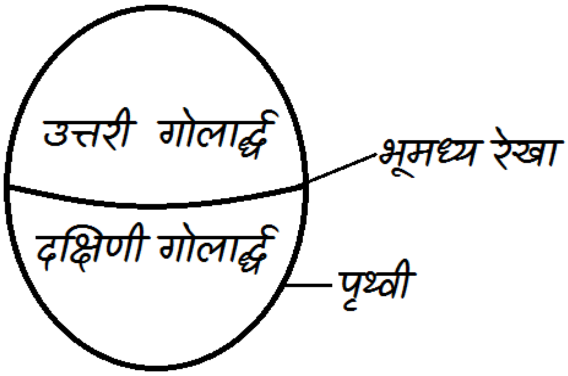

मानचित्र – 1

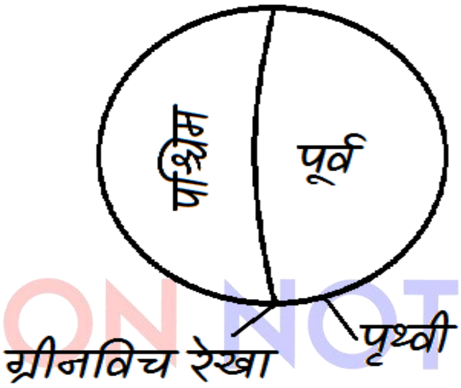

मानचित्र – 2

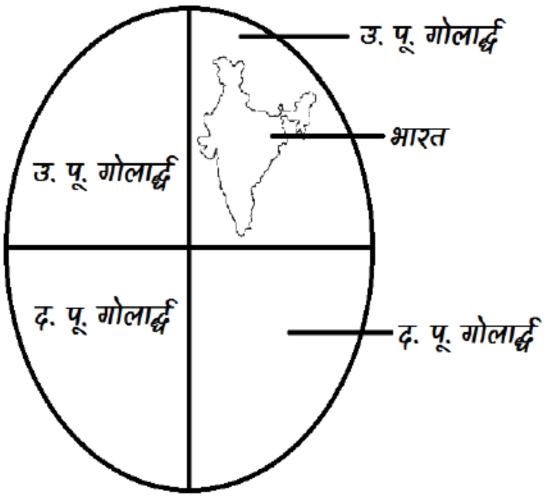

मानचित्र – 3

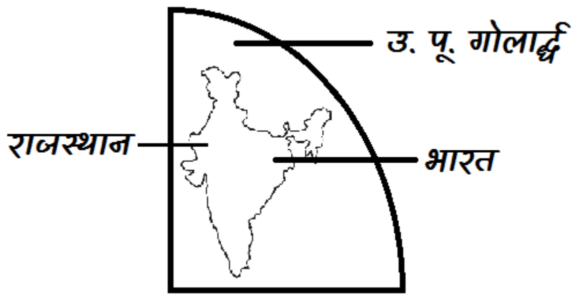

मानचित्र – 4

प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं।

- **पृथ्वी को भूमध्य रेखा** (विषुवत रेखा) से दो **भागों में** विभाजित किया गया है –

1. उत्तरी गोलार्द्ध
2. दक्षिणी गोलार्द्ध

इसे आप मानचित्र – 1 के माध्यम से समझ सकते हैं।

इसी प्रकार ग्रीनविच रेखा पृथ्वी को दो भागों में बांटती है–

1. पूर्वी क्षेत्र
2. पश्चिमी क्षेत्र

जिसे आप मानचित्र – 2 में देख सकते हैं।

नोट :-

1. विश्व (अर्थात् **पृथ्वी पर**) में राजस्थान **"उत्तर - पूर्व"** दिशा में स्थित है। (देखे मानचित्र- 3)
2. एशिया महाद्वीप में राजस्थान **"दक्षिणी -पश्चिम"** दिशा में स्थित है। (देखिए मानचित्र – 3,4)
3. **भारत में** राजस्थान **उत्तर - पश्चिम** में स्थित है। देखिए मानचित्र -4 (भारत)]

अब तक हमने देखा कि राजस्थान शब्द का उद्भव कैसे हुआ? तथा हम ने समझा कि पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति कहां पर है? अब हम अपने अगले बिंदु "राजस्थान का विस्तार" के बारे में पढ़ते हैं-

राजस्थान का विस्तार -इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए-

1. भूमध्य रेखा (विषुवत रेखा)
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए-

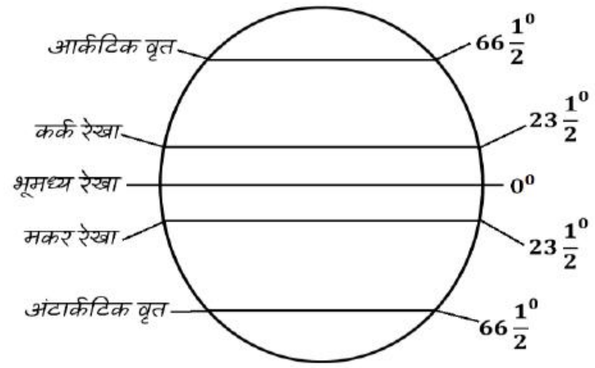

मानचित्र – 1

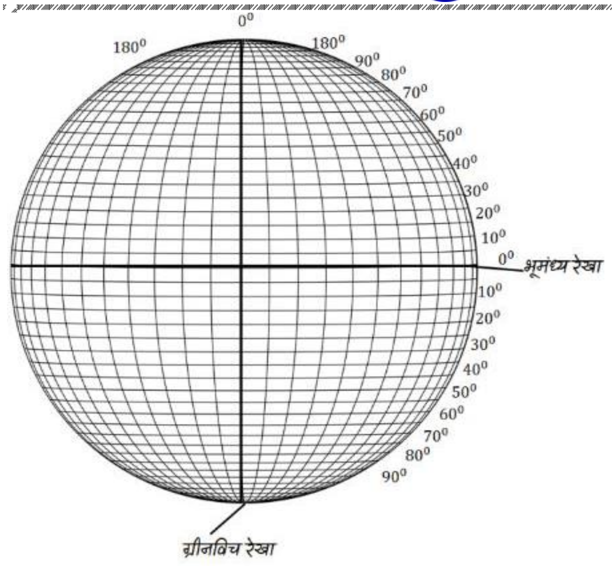

मानचित्र – 2

नोट - भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा है। यह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे **विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा** कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तर में कर्क रेखा है व दक्षिण में मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी या ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "उत्तर - दक्षिण तथा पूर्व - पश्चिम"में विभाजित किया गया है । इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते हैं।

अक्षांश रेखाएँ - वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई हैं, अर्थात् भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते हैं। **भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा** माना गया है। (देखें मानचित्र -1)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90⁰ उत्तरी गोलार्द्ध में और 90⁰ दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180⁰ है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181⁰ होती है।

देशांतर रेखाएं- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360⁰ रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है।

पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली और उत्तर - दक्षिण दिशा में खींची गयी। **काल्पनिक रेखाओं को याम्योत्तर , देशान्तर , मध्यान्तर रेखाएं कहते हैं।**

- ग्रीनविच, (जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है) से गुजरने वाली याम्योत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए । इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते हैं।
- इसका मान देशांतर है तथा यहाँ से हम 180° डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते हैं।

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक ''भारत एवं विश्व का भूगोल पढ़े"।

राजस्थान का **अक्षांशीय विस्तार 23°03" से 30°12" उत्तरी अक्षांश** ही तक है जिसका **अंतर 7°09 मिनट** है। जबकि राजस्थान का **देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर** है। जिसका अंतर **8°47 मिनट है।** (देखें मानचित्र A, B)

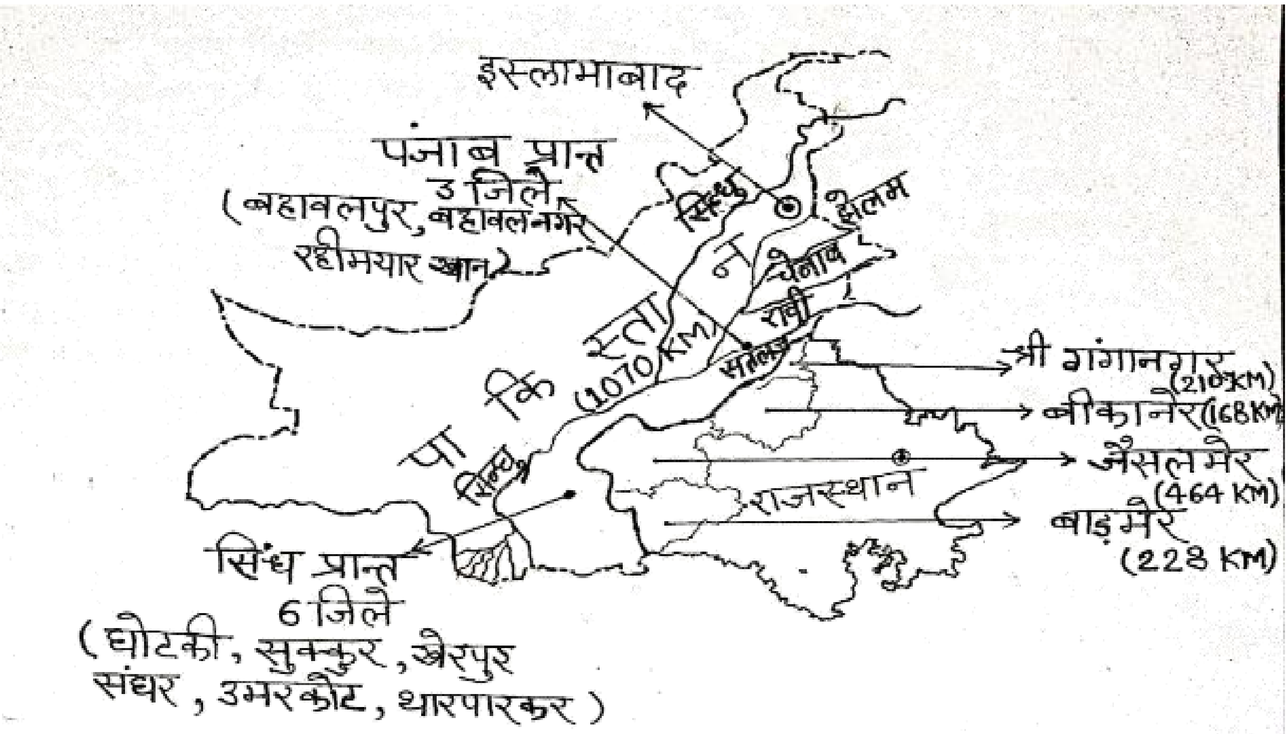

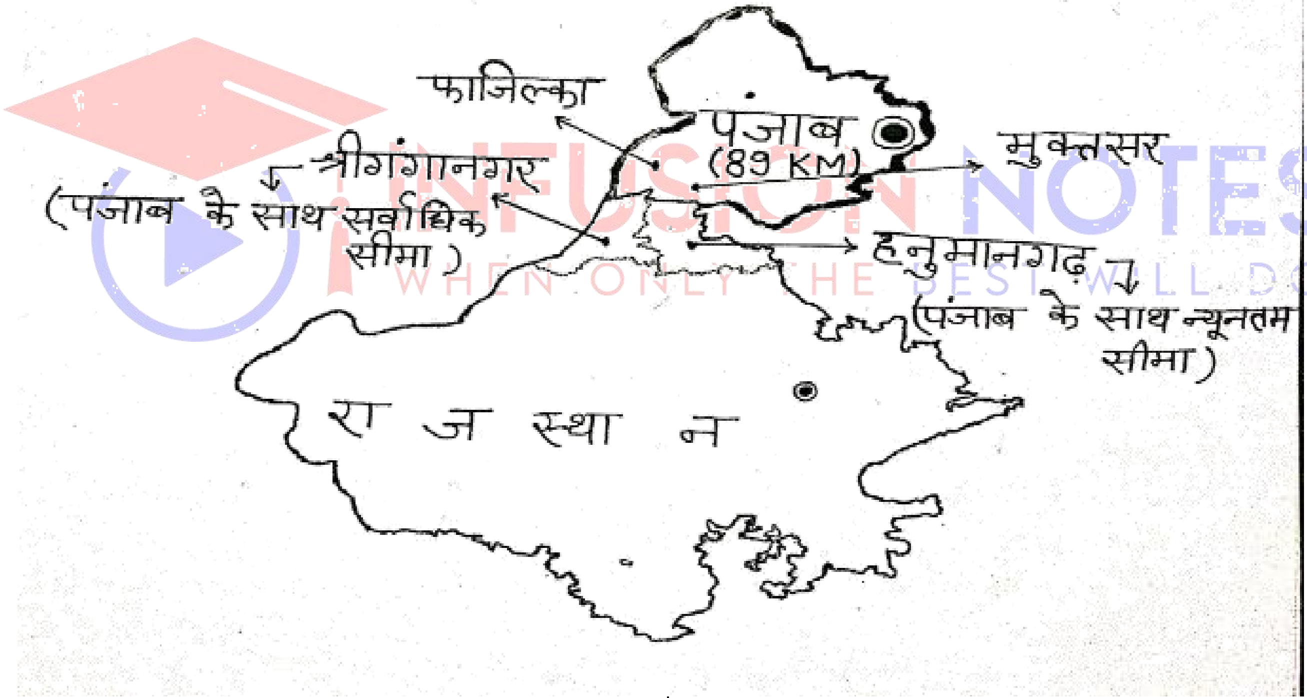

महत्वपूर्ण प्रश्न

1. राजस्थान का प्रवेश द्वार किसे कहा जाता है - भरतपुर
2. महुआ के पेड़ पाये जाते है – उदयपुर व चित्तौड़गढ़
3. राजस्थान में छप्पनिया अकाल किस वर्ष पड़ा - 1956 वि.सं.
4. राजस्थान में मानसून वर्षा किस दिशा में बढ़ती है - दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व में

नोट :- लेकिन राजस्थान में उत्तर – पश्चिम से दक्षिण - पूर्व की ओर वर्षा की मात्र में वृद्धि होती है ।

5. राजस्थान में गुरु शिखर चोटी की ऊँचाई कितनी है -1722 मीटर
6. राजस्थान में किस शहर को सन सिटी के नाम से जाना जाता है – जोधपुर को

7. राजस्थान की आकृति है – विषम कोण चतुर्भुज
8. राजस्थान के किस जिले का क्षेत्रफल सबसे ज्यादा है - जैसलमेर
9. राज्य की कुल स्थलीय सीमा की लम्बाई है - 5920 किमी
10. राजस्थान का सबसे पूर्वी जिला है - धौलपुर
11. राजस्थान का सागवान कौन सा वृक्ष कहलाता है – रोहिड़ा
12. राजस्थान के किस क्षेत्र में सागौन के वन पाए जाते है - दक्षिणी
13. जून माह में सूर्य किस जिले में लम्बत् चमकता है - बाँसवाड़ा
14. राजस्थान में पूर्ण मरूस्थल वाले जिलें है- जैसलमेर, बाड़मेर
15. राजस्थान के कौन से भाग में सर्वाधिक वर्षा होती है – दक्षिणी - पूर्वी
16. राजस्थान में सर्वाधिक तहसीलों की संख्या किस जिले में है - जयपुर
17. राजस्थान में सर्वप्रथम सूर्योदय किस जिले में होता है - धौलपुर
18. उड़िया पठार किस जिले में स्थित है - सिरोही
19. राजस्थान में किन वनों का अभाव है – शंकुधारी वन
20. राजस्थान के क्षेत्रफल का कितना भू-भाग रेगिस्तानी है – लगभग दो-तिहाई
21. राजस्थान के पश्चिम भाग में पाए जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प – पीवणा सर्प
22. राजस्थान के पूर्णतया: वनस्पति रहित क्षेत्र - समगाँव (जैसलमेर)
23. राजस्थान के किस जिले में सूर्य किरणों का तिरछापन सर्वाधिक होता है -श्रीगंगानगर
24. राजस्थान का क्षेत्रफल इजरायल से कितना गुना है - 17 गुना बड़ा है
25. राजस्थान की 1070 किमी० लम्बी पाकिस्तान से लगी सीमा रेखा का नाम – रेडक्लिफ रेखा
26. कर्क रेखा राजस्थान के किस जिले से छूती हुई गुजरती है – डूंगरपुर व बाँसवाड़ा को
27. राजस्थान में जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला - जयपुर
28. थार के रेगिस्तान के कुल क्षेत्रफल का कितना प्रतिशत राजस्थान में है - 58 प्रतिशत
29. राजस्थान के रेगिस्तान में रेत के विशाल लहरदार टीले को क्या कहते हैं - धोरे
30. राजस्थान का एकमात्र जीवाश्म पार्क स्थित है – आँकल गाँव (जैसलमेर)

राजस्थान की अन्य राज्यों से सीमा

राजस्थान के साथ जिन राज्यों की सीमा लगती है उन राज्यों के नाम :-

शोर्ट ट्रिक :- "पं. हरि उत्तर में गुम गयों"

सूत्र		**राज्य**
पं	-	पंजाब
हरि	-	हरियाणा
उत्तर	-	उत्तर प्रदेश
में	-	मध्य प्रदेश
गु	-	गुजरात

पंजाब (89 किमी०)

- राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती है तथा पंजाब के दो जिले फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती है ।
- पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती है।
- पंजाब सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा दूर जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है।
- पंजाब सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला श्रीगंगानगर व छोटा जिला हनुमानगढ़ है।

शोर्ट ट्रिक

पंजाब की सीमा से सटे राजस्थान राज्य के जिले है।

''श्री हनुमान''

सूत्र		**जिला**
श्री	-	श्रीगंगानगर
हनुमान	-	हनुमानगढ़

खिज्राबाद -	चित्तौड़गढ़	ब्रजनगर -	झालरापाटन
भटनेर -	हनुमानगढ़	रामनगर -	गंगानगर
जयनगर -	जयपुर	गोपालपाल -	करौली
श्रीमाल -	भीनमाल	मांड -	जैसलमेर
उपकेशपट्टन -	ओसियां	ताम्रवती नगरी -	आहड़

राजस्थान
विभिन्न क्षेत्रों के प्राचीन नाम

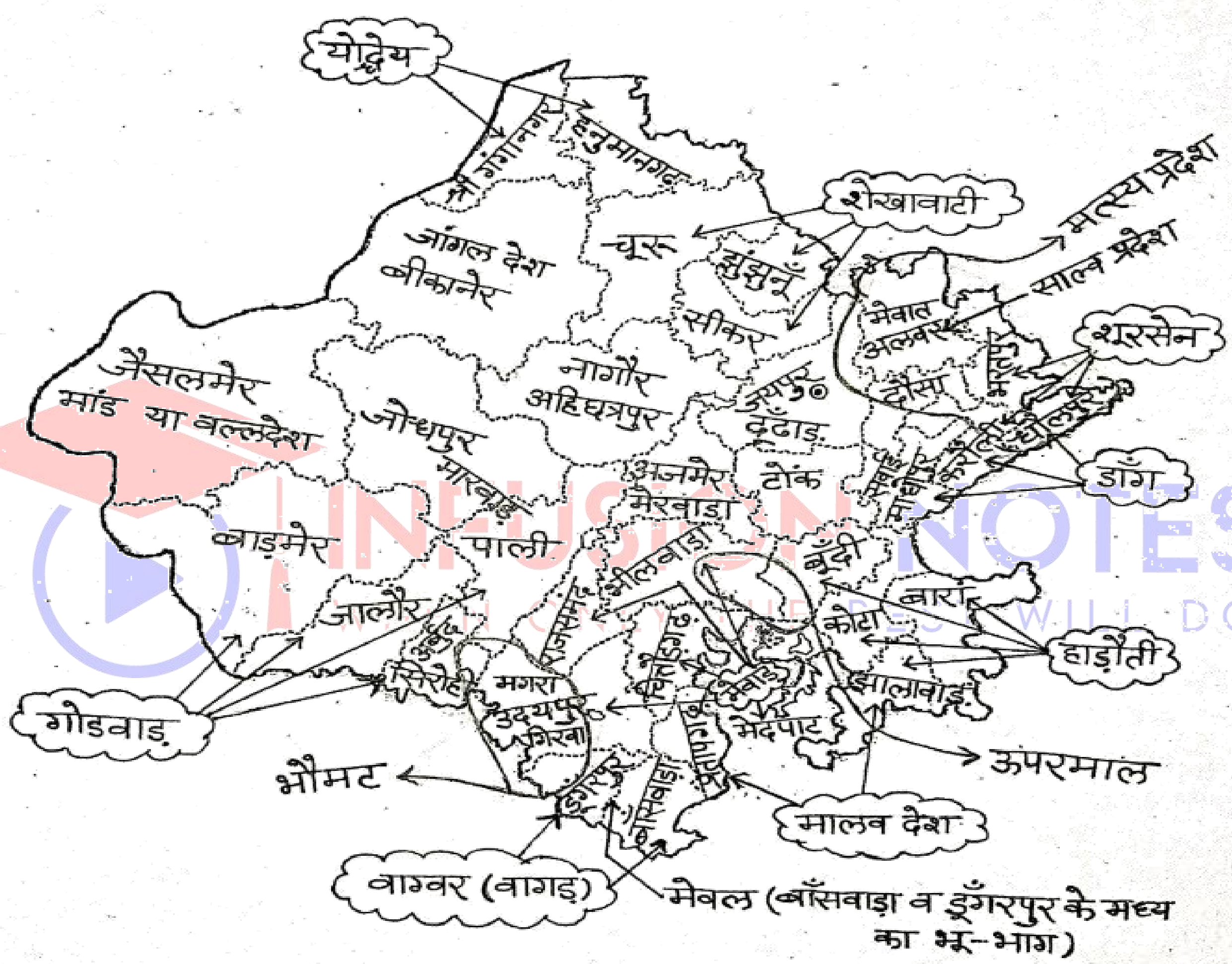

<u>प्राचीन भौगोलिक क्षेत्रों की वर्तमान स्थिति</u>

- ***जांगल देश*** – ***बीकानेर*** और ***जोधपुर*** जिले का ***उत्तरी*** भाग
- ***यौद्धेय*** – ***हनुमानगढ़*** और ***श्रीगंगानगर*** के आसपास का क्षेत्र
- ***गिरवा*** - उदयपुर में चारों ओर पहाड़ियाँ होने के कारण ***उदयपुर की आकृति एक तश्तरीनुमा बेसिन*** जैसी है जिसे स्थानीय भाषा में गिरवा कहते हैं।
- ***गोडवाड़***- दक्षिण पूर्वी बाड़मेर, पश्चिमी सिरोही, जालौर
- *अहिछत्रपुर - नागौर*
- *राठ – अलवर जिले का हरियाणा राज्य से लगता क्षेत्र*
- *शेखावाटी - चूरू, सीकर, झुंझुनू जिले*
- *ढूंढाड़ – जयपुर में आसपास का क्षेत्र, दौसा*
- *कुरुदेश – अलवर जिले का उत्तरी भाग*
- *आर्बुद व चंद्रावती - सिरोही व आबू के आसपास का क्षेत्र*
- *माँड या वल्लभ देश - जैसलमेर*

- वागड़ या वाग्वर - डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़
- मेवल – डूंगरपुर, बाँसवाड़ा के मध्य का भाग
- मरु या मारवाड़ – जोधपुर व आसपास का क्षेत्र
- मेवात - भरतपुर व अलवर का प्रदेश
- हाड़ौती - कोटा, बूंदी, झालावाड़ व बारां जिले
- **तोरावाटी** - शेखावाटी में **कांतिली नदी** का अपवाह क्षेत्र जहाँ प्रारंभ में तवर या **तोमर वंशीय शासकों** का अधिपत्य रहा ।
- बांगड़ या बांगर - पाली, नागौर, सीकर, व झुंझुनू जिले का कुछ भाग (लूनी नदी का अपवाह क्षेत्र)
- **मत्स्य** - अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली जिलें की पूर्वी भाग
- मेरु – अरावली पर्वतीय प्रदेश
- गुर्जरात्रा – जोधपुर जिले का दक्षिणी भाग (मंडोर)
- मेरवाड़ा - अजमेर व राजसमंद जिले का दिवेर क्षेत्र
- खेराड़ व मालखेराड़ - भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर तहसील व टोंक जिले का अधिकांश भाग
- मालव देश - प्रतापगढ़, झालावाड़
- थली - बीकानेर, पाली, नागौर और चुरू का अधिकांश भाग एवं दक्षिणी श्रीगंगानगर की मरुस्थलीय भूमि
- भौमट क्षेत्र - डूंगरपुर, पूर्वी सिरोही, उदयपुर जिले का अरावली पर्वतीय आदिवासी क्षेत्र
- सालव प्रदेश – अलवर का क्षेत्र
- भोराठ का पठार – उदयपुर जिले की गोगुंदा व राजसमंद जिले की कुंभलगढ़ तहसीलों का क्षेत्र, कुंभलगढ़ व गोगुंदा के मध्य का पठारी भाग।
- लसाड़िया का पठार – उदयपुर में जयसमंद से आगे कटा - फटा पठारी भाग।
- देशहरो – उदयपुर में जरगा (उदयपुर) व रागा (सिरोही) पहाड़ियों के बीच का क्षेत्र सदा हरा भरा रहने के कारण देशहरो कहलाता है।
- मगरा - उदयपुर का उत्तरी पश्चिमी पर्वतीय भाग मगरा कहलाता है।
- ऊपरमाल - चित्तौड़गढ़ के भैंसरोड़गढ़ से लेकर भीलवाड़ा के बिजोलिया तक का पठारी भाग ऊपरमाल कहलाता है।
- नाकोड़ा पर्वत छप्पन की पहाड़ियाँ – बाड़मेर के सिवाना ग्रेनाइट पर्वतीय क्षेत्र में स्थित गोलाकार पहाड़ियों का समूह नाकोड़ा पर्वत या छप्पन की पहाड़ियाँ कहलाती हैं।
- छप्पन का मैदान – बाँसवाड़ा व प्रतापगढ़ के मध्य का भाग पन का मैदान कहलाता है। यह मैदान माही नदी बनाती है।
- कांठल - माही नदी के किनारे - किनारे प्रतापगढ़ का भू - भाग कांठल कहलाता है। इसलिए **माही नदी को कांठल की गंगा कहते हैं।**
- भाखर या भाकर – पूरी सिरोही क्षेत्र में अरावली की तीव्र ढाल वाली ऊबड़ - खाबड़ पहाड़ियों का क्षेत्र भाखर या भाकर कहलाता है।
- खेराड़– भीलवाड़ा व टोंक का वह क्षेत्र जो बनास बेसिन में स्थित है।
- मालानी – जालौर और बालोतरा के मध्य का भाग।
- देवल या मेवलिया – डूंगरपुर व बाँसवाड़ा के मध्य का भाग।
- लिटलरण – राजस्थान में कच्छ की खाड़ी के क्षेत्र को लिटलरण कहते हैं।
- मालखेराड़ – ऊपरमाल व खेराड़ क्षेत्र संयुक्त रुप में माल खेराड़ कहलाता है।
- पुष्प क्षेत्र – डूंगरपुर व बाँसवाड़ा संयुक्त रुप से पुष्प क्षेत्र कहलाता है।
- सुजला क्षेत्र - सीकर, चूरू व नागौर संयुक्त रुप से सुजला क्षेत्र कहलाता है।
- मालवा का क्षेत्र – झालावाड़ व प्रतापगढ़ संयुक्त रुप से मालवा का क्षेत्र कहलाता है।
- धरियन – जैसलमेर जिले का बालुका स्तूप युक्त क्षेत्र जहाँ जनसंख्या “न”के बराबर है । यह क्षेत्र धरियन कहलाता है।
- भोमट – डूंगरपुर पूर्वी सिरोही व उदयपुर जिले का आदिवासी प्रदेश भोमट कहलाता है।
- कूबड़ पट्टी – नागौर के जल में **फ्लोराइड की मात्रा अधिक** होती है जिससे शारीरिक विकृति होने की संभावना हो जाती है। इसीलिए इस क्षेत्र को **कूबड़ पट्टी** के नाम से जाना जाता है।
- लाठी सीरीज क्षेत्र - जैसलमेर में पोकरण से मोहनगढ़ तक पाकिस्तानी सीमा के सहारे विस्तृत एक भू-गर्भीय **मीठे जल की पट्टी** है। इस लाठी सीरीज के ऊपर **सेवण घास** उगती है।
- बागड़ / बांगर- शेखावटी व मरु प्रदेश के मध्य संकरी पेटी।
- वागड़ – डूंगरपुर व बाँसवाड़ा का क्षेत्र।

- बीहड़ / डांग / खादर - चंबल नदी सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर में बड़े – बड़े गड्ढों का निर्माण करती है। इन गड्ढों को **बीहड़ / डांग / खादर** नाम से पुकारा जाता है। **सर्वाधिक बीहड़ धौलपुर** में है।
- **शूरसेन** - भरतपुर, धौलपुर, करौली।
- ढूंढाड़ - जयपुर के आसपास का क्षेत्र।
- गुर्जरात्रा – जोधपुर का दक्षिण भाग।
- माल / वल्ल - जैसलमेर
- अरावली - आडवाल।

राजस्थान के प्राचीन क्षेत्रों के नाम -

उपनाम / प्राचीन नाम	-	स्थानी / क्षेत्र
राजस्थान का हृदय	-	अजमेर
राजस्थान का धातु नगर	-	नागौर
स्वर्ण नगरी	-	जैसलमेर
हवेलियों व झरोखों का शहर	-	जैसलमेर
गलियों का शहर	-	जैसलमेर
ग्रेनाइट शहर	-	जालौर
राजस्थान का शिमला	-	माउंट आबू
राजस्थान का वैल्लोर	-	भैंसरोड़गढ़ दुर्ग (चि.)
शिक्षा का तीर्थ स्थल	-	कोटा
राजस्थान का गौरव	-	चित्तौड़गढ़
राजस्थान का मैनचेस्टर	-	भीलवाड़ा
वस्त्र नगरी / टेक्सटाइल सिटी	-	भीलवाड़ा
रेगिस्तान का गुलाब	-	जैसलमेर
राजस्थान का अंडमान	-	जैसलमेर
राजस्थान का अन्न भंडार	-	श्रीगंगानगर
सिटी ऑफ वेल्स (घंटियों)	-	झालरापाटन
तांबा जिला	-	झुंझुनूं
तीर्थों का भांजा	-	मचकुंड (धौलपुर)
तीर्थों का मामा / कोंकण तीर्थ	-	पुष्कर
राजस्थान का थर्मोपल्ली	**-**	**हल्दीघाटी**
बावड़ियों का शहर	-	बूंदी
थार का घड़ा	-	चाँदन नलकूप
थार का प्रवेश द्वार	-	जोधपुर
सूर्य नगरी	-	जोधपुर
मरु प्रदेश	-	जोधपुर
फाउंटेन व माउंटेन का शहर	-	उदयपुर
झीलों की नगरी	-	उदयपुर
राजस्थान का कश्मीर	-	उदयपुर
पूर्व का वेनिस	-	उदयपुर
सौ द्वीपों का शहर	-	बाँसवाड़ा
आदिवासियों का शहर	-	बाँसवाड़ा
महान भारतीय जल विभाजक रेखा	-	अरावली पर्वतमाला
राजस्थान की कामधेनु	-	चंबल नदी
वागड़ की गंगा	-	माही नदी

लावा के द्वारा होता है । लाल मिट्टी करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर में पाई जाती है ।

4. इस प्रदेश में मुख्य रूप से कपास, गन्ना, चावल, खट्टे रसदार फल, सब्जियाँ आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है झालावाड़ में मौसमी / संतरा सर्वाधिक होता है

5. राजस्थान के इस क्षेत्र प्रदेश में **धात्विक एवं अधात्विक दोनों प्रकार के खनिज पाए** जाते हैं जैसे – कोटा में कोटा स्टोन, भीलवाड़ा में अभ्रक, टोंक में तांमडा (एक अधात्विक खनिज है) यहाँ मुख्य रूप से साल एवं सागवान, जामुन, बरगद आदि के वनस्पति के रूप में पाए जाते हैं। **बांस को आदिवासियों का "हरा सोना" कहा जाता है आदिवासियों का कल्पवृक्ष महुआ** को कहा जाता है ।

6. इस क्षेत्र में **औसत वार्षिक वर्षा 80 सेमी. से 120 सेमी.** तक होती है इस प्रदेश को दो भागों में बाँटा गया है

- विंध्याचल चट्टानी प्रदेश जिसमें चूना पत्थर चिकनी मिट्टी
- हाड़ौती का पठार

7. महान सीमा भ्रंश - अरावली पर्वतमाला के पूर्व में स्थित है जो कि विंध्याचल पर्वत श्रेणी को अरावली से अलग करता है

अंतिम रूप से सभी भौतिक प्रदेशों का निष्कर्ष

- उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि तीव्र जलवायु परिवर्तन, औद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण एवं कंक्रीट के जंगलों के विस्तार एवं मानवीय हस्तक्षेप के कारण भौतिक प्रदेशों की संरचना एवं पर्यावरण में परिवर्तन हो रहा है ।
- इसी कारण राजस्थान में प्रतिवर्ष सूखा एवं अकाल की स्थिति पाई जाती है ।
- अतः इस के संरक्षण के लिए एवं भौतिक प्रदेशों को मूल संरचना में लाने की बहुत आवश्यकता है, जिससे सतत् एवं पोषणीय विकास को बढ़ावा मिले।

अध्याय – 2

राजस्थान का अपवाह तंत्र : नदियां एवं झीलें

अपवाह तंत्र -

- जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं, तो उसे अपवाह तंत्र कहते हैं ।
- अपवाह तंत्र में नदियाँ एवं उसकी सहायक नदियाँ शामिल होती हैं।
- जैसे गंगा और उसकी सहायक नदियाँ मिल कर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं उसी प्रकार सिंधु और उसकी सहायक नदियाँ (झेलम, रावी, व्यास, चिनाब) मिलकर एक अपवाह तंत्र बनाती है।
- इसी तरह ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियाँ भी अपवाह तंत्र बनाती हैं।
- भारत की सबसे लंबी नदी गंगा है तथा सबसे बड़ा अपवाह तंत्र वाली नदी ब्रह्मपुत्र है।
  अब हम अध्ययन करेंगे राजस्थान के अपवाह तंत्र के बारे में।
- राजस्थान में कई नदियाँ हैं जैसे लूनी, माही, बनास, चंबल । इसके अलावा यहाँ पर स्थित कई झीलें भी इस अपवाह तंत्र में शामिल होती हैं ।
- प्रिय छात्रों जैसा कि आपको मालूम है राजस्थान में **अरावली पर्वतमाला** स्थित है, यह राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है इसलिए यह **राज्य की नदियों का स्पष्ट रूप से दो भागों** में विभाजित करती है।
- **इसके पूर्व में बहने वाली नदियाँ अपना जल बंगाल की खाड़ी में** तथा इसके **पश्चिम में बहने वाली नदियाँ अपना जल अरब सागर** में लेकर जाती है।
- राजस्थान के अपवाह तंत्र को हम दो भागों में विभक्त करेंगे फिर उनके अन्य क्रमशः 4 एवं 3 उप भाग होंगे -

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण

2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण को चार भागों में बाँटा गया है -

(अ) उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान- इस तंत्र में लूनी, जवाई, सूकड़ी, बांडी ,सागी जोजड़ी घग्घर, कातली नदियाँ शामिल होती है ।

(ब) दक्षिण व पश्चिमी राजस्थान - इसमें पश्चिमी बनास, साबरमती, वाकल, व सेई नदियाँ शामिल होती है

(स) दक्षिणी राजस्थान - इसमें माही, सोम, जाखम, अनास मोरेन नदियाँ शामिल होती हैं ।

(द) दक्षिण - पूर्वी राजस्थान - इसमें चंबल, कुनु, पार्वती, कालीसिंध, कुराल, आहू, नेवज, परवन, मेज, गंभीरी, छोटी कालीसिंध, ढीला, खारी, माशी, कालीसिल, मोरेल, डाई, सोहादरा आदि नदियाँ शामिल होती हैं।

2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण - प्रिय छात्रों नदियों के विभाजन का सबसे अच्छा तरीका है और इसी आधार पर नदियों को तीन भागों में बाँटा गया है

(अ) बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

इस अपवाह तंत्र में प्रमुख नदियाँ शामिल होती है । जैसे **चंबल, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बाण गंगा, खारी, बेड़च, गंभीरी आदि।** ये नदियाँ अरावली के पूर्व में बहती हैं इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी घाट तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विंध्याचल पर्वत है यह सभी नदियाँ अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी मेंले जाती हैं।

(ब) अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

इस अपवाह तंत्र में शामिल प्रमुख नदियाँ है । जैसे **माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूणी, इत्यादि । पश्चिमी बनास, लूनी गुजरात के कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती हैं,** ये सभी नदियाँ अरब सागर की ओर अपना जल लेकर जाती हैं।

(स) अंतः प्रवाह वाली नदियाँ -

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ और अरब सागर में गिरने वाली नदियों के अलावा कुछ छोटी नदियाँ भी हैं जो कुछ दूरी तक प्रभावी होकर राज्य में अपने क्षेत्र में विलुप्त हो जाती हैं तथा उनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता है, इसलिए इन्हें आंतरिक प्रवाह वाली नदियाँ कहा जाता है, जैसे :- **काकनी, कांतली, साबी घग्घर, मेंथा, बांडी, रूपनगढ़ इत्यादि।**

राजस्थान राज्य की नदियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य जो की परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है -

राजस्थान की अधिकांश नदियों का प्रवाह क्षेत्र अरावली पर्वत की पूर्व में है ।

- **राजस्थान में चंबल तथा माही के अलावा अन्य कोई नदी बारह मासी नहीं है।**
- **राज्य में चूरू व बीकानेर दो ऐसे जिले हैं जहाँ कोई नदी नहीं है ।**
- श्रीगंगानगर में पृथक् से कोई नदी नहीं है लेकिन वर्षा होने पर घग्घर नदी का बाढ़ का पानी सूरतगढ़, अनूपगढ़ तक चला जाता है ।
- राज्य के 60% भू-भाग पर आंतरिक जल प्रवाह का विस्तार है।
- राज्य में सबसे अधिक सतही जल चंबल नदी में उपलब्ध है।
- **राज्य में बनास नदी का जल ग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।**
- **राज्य में सर्वाधिक नदियाँ कोटा संभाग में** बहती हैं ।
- **राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।**
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं ।
- मारवाड़ की जीवन रेखा लूनी नदी को कहते हैं ।
- बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं ।
- राजसमंद की जीवन रेखा नंद समंद झील कहलाती है ।
- भरतपुर की जीवन रेखा मोती झील है ।
- गुजरात की जीवन रेखा नर्मदा परियोजना है ।
- जमशेदपुर की जीवन रेखा स्वर्ण रेखा नदी को कहा जाता है इस नदी पर हुंडरू जल प्रपात स्थित है ।
- आदिवासियों की या दक्षिणी राजस्थान की जीवन रेखा माही नदी को कहा जाता है ।
- पूरे राज्य में बहने वाली सबसे बड़ी नदी बनास है ।
- भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना 1955 में की गई थी । इस बोर्ड का

नियंत्रण राजस्थान सरकार को सौंपा गया था। 1971 से इस बोर्ड को भूजल विभाग के नाम से जाना जाता है इसका कार्यालय जोधपुर में है।

- *पूर्णत : राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी तथा सर्वाधिक जल ग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है।*
- *चंबल नदी पर भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया जल प्रपात तथा मांगली नदी पर बूंदी में "भीमलत प्रपात" है।*
- *सर्वाधिक जिलों में बहने वाली नदियाँ चंबल, बनास, लूणी है, जो कि प्रत्येक नदी 6 जिलों में बहती है।*
- ***अंतर्राज्य सीमा बनाने वाली एक मात्र नदी है चंबल,** जो कि राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।*
- *टोंक जिले की राजमहल नामक जगह पर बनास नदी, डाई नदी तथा खारी नदी के द्वारा त्रिवेणी संगम बनाया जाता है। यहाँ शिव एवं सूर्य की संयुक्त प्रतिमा स्थित है, जो मार्तंड भैरव मंदिर या देवनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है यहाँ नारायण सागर बाँध स्थित है।*

प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं। सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे -

1. ***चंबल नदी** –प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्वपूर्ण विशेषताएं –*

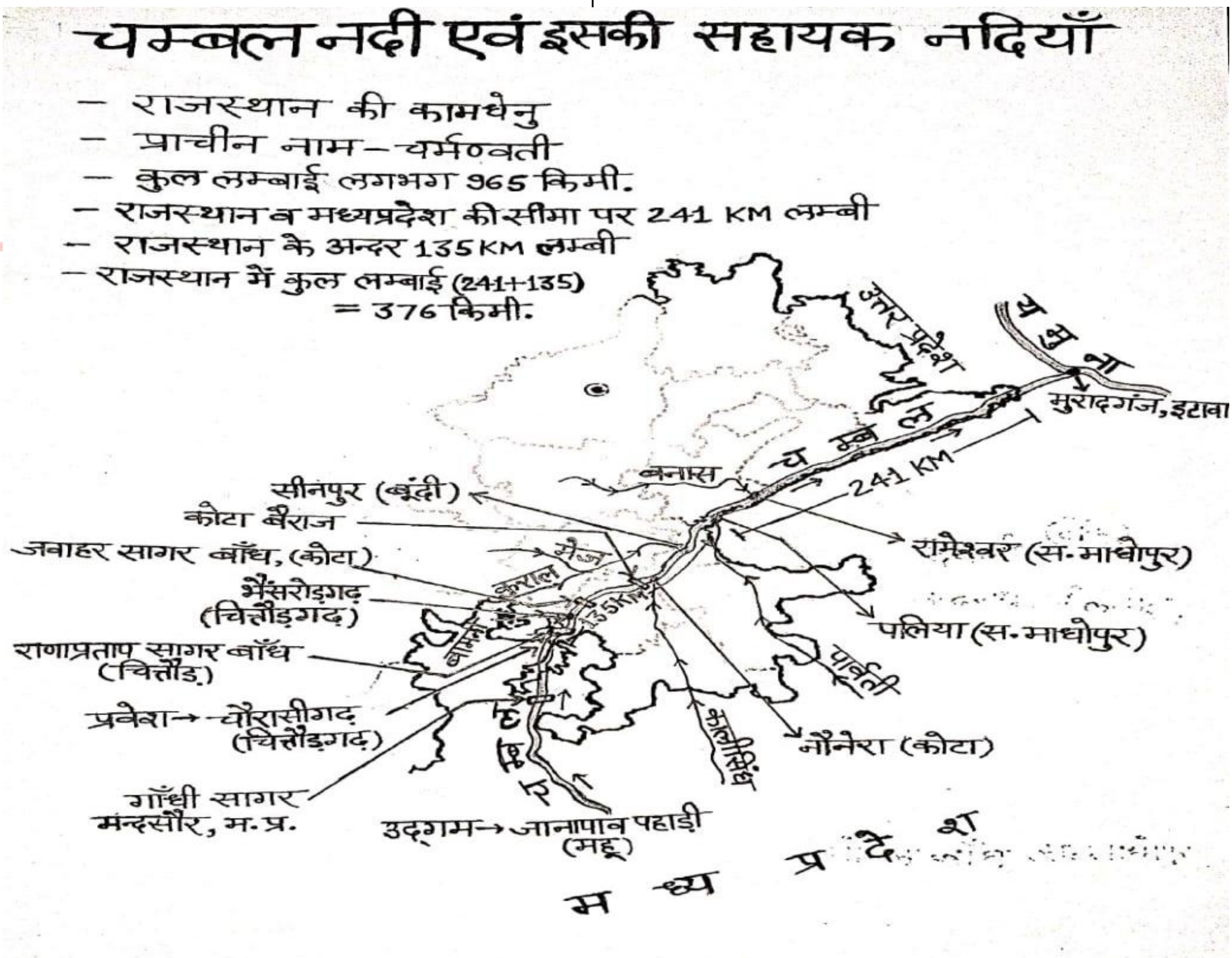

- *चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्य सीमा निर्धारित करती है इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम है चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी।*
- *इस नदी की **कुल लंबाई लगभग 966 किलो मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है** यह नदी मध्यप्रदेश में लगभग 335 किलो मीटर,*

- प्रारंभ में इस नदी को **आयड़ नदी** के नाम से जानते हैं तथा उदय सागर झील के उपरांत इसे बेड़च नदी के नाम से जानते हैं।
- इस नदी का उद्गम स्थल उदयपुर जिले में स्थित गोगुंदा की पहाड़ियों से होता है उदयपुर में 13 किलो मीटर बहने के बाद यह नदी उदयसागर झील में गिरती है। उदयपुर, चित्तौड़गढ़ में बहती हुई यह नदी भीलवाड़ा में बीगोद कस्बे के निकट बनास नदी में मिल जाती है। वहीं मेनाल नदी बीच में मिलती है इनके संगम स्थल को त्रिवेणी संगम कहते हैं।
- उदयपुर जिले में स्थित प्रसिद्ध आहड़ सभ्यता इसी नदी के तट पर स्थित थी। बेड़च नदी की कुल लंबाई लगभग 190 किलो मीटर है।
- **इस नदी की सहायक नदियाँ गंभीरी, गुजरी, वागन है।**

4. **गंभीरी नदी -**

- **यह मध्यप्रदेश राज्य के रतलाम जिले के जावरा की पहाड़ियों से निकलती है** यह नदी चित्तौड़गढ़ जिले में बेड़च में जाकर विलीन हो जाती है इसे चित्तौड़गढ़ की गंगा भी कहा जाता है।

5. **खारी नदी -**

- इस नदी का **उद्गम स्थल राजसमंद जिले में स्थित बिजराल ग्राम की पहाड़ियों से** होता है।
- यह नदी अजमेर तथा उदयपुर की सीमा निर्धारित करती है
- यहाँ ओझियाणा की सभ्यता विकसित हुई थी आगे चल कर यह नदी टोंक जिले के राजमहल नामक स्थान पर **बनास में जाकर मिल जाती है।**

6. **कोठारी नदी -**

- इस नदी का **उद्गम राजसमंद जिले के दिवेर नामक स्थान से** होता है तथा भीलवाड़ा जिले में बनास नदी में जाकर मिल जाती है।
- इस नदी पर **मेज बाँध** बनाया गया है जो भीलवाड़ा जिले को पेयजल उपलब्ध करवाता है।
- भीलवाड़ा जिले की प्रसिद्ध बागोर सभ्यता कोठारी नदी के तट पर विकसित हुई।

7. **माशी नदी -**

- इस नदी का **उद्गम अजमेर (किशनगढ़) जिले** से होता है यह नदी टोंक जिले में बीसलपुर के समीप बनास नदी में विलीन हो जाती है।

8. **डाई नदी -**

इस नदी का **उद्गम अजमेर जिले के किशनगढ़ (नसीराबाद) के मध्य स्थित पहाड़ियों** से होता है यह नदी टोंक जिले में राजमहल कस्बे के समीप बनास में जाकर मिल जाती है यह भी बनास की एक सहायक नदी है।

9. **मानसी नदी -**

इस नदी का **उद्गम भीलवाड़ा जिले में करणगढ़ की पहाड़ियों से** होता है यह नदी भीलवाड़ा जिले में बनास में जाकर मिल जाती है।

10. **बांडी नदी -**

इस नदी का **उद्गम जयपुर जिले में स्थित सामोद की पहाड़ियों** से होता है यह नदी माशी नदी में विलीन हो जाती है।

11. **ढूंढ नदी -**

इस नदी का **उद्गम जयपुर जिले में स्थित अचरोल की पहाड़ियों से** होता है यह नदी जयपुर तथा दौसा जिले में बहती हुई दौसा जिले के लालसोट तहसील के समीप मोरेल नदी में मिल जाती है।

12. **बाणगंगा नदी –**

बाणगंगा नदी

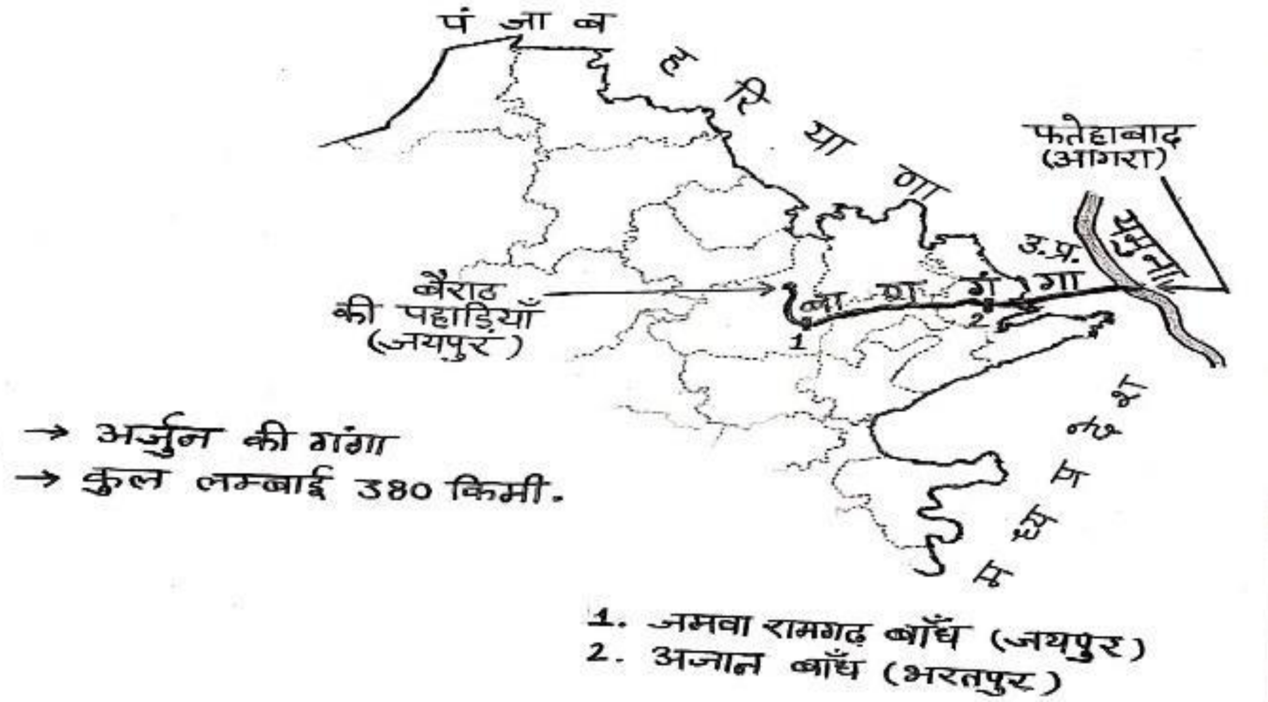

*इसका **उद्गम जयपुर जिले की बैराठ पहाड़ियों से होता है इसे अर्जुन की गंगा भी कहा जाता है ।***

- *इस नदी की कुल लंबाई लगभग 380 किलोमीटर है ।*
- *इस नदी पर जयपुर में **जमवारामगढ़ बाँध** बना हुआ है इस नदी को "ताला नदी" के नाम से भी जाना जाता है*
- ***भरतपुर में इस नदी पर अजान बाँध** बना हुआ है जिससे घाना पक्षी अभ्यारण को जलापूर्ति की जा रही है ।*
- *अपने प्रवाह के अंत में यह नदी आगरा के समीप फतेहाबाद नामक स्थान पर यमुना में मिल जाती है।*

राज्य की केवल 3 नदियाँ बाणगंगा, चंबल और गंभीरी यमुना में अपना जल सीधे लेकर जाती हैं।

***पार्वती** :-*

*उद्गम :- **मध्यप्रदेश में विंध्याचल पर्वत के "सीहोर" नामक स्थान से** निकलती है ।*

राजस्थान में प्रवेश :- करयाहट के निकट बारां जिले में ।

बहाव क्षेत्र:- बारां तथा कोटा जिले में बहती हुई सवाई माधोपुर जिले में पालिया नामक स्थान पर चंबल से मिल जाती है ।

***कालीसिंध** :-*

***उद्गम :- मध्यप्रदेश में देवास के निकट बागली की पहाड़ियों से** निकलती है ।*

राजस्थान में प्रवेश :- रायपुर के निकट झालावाड़ जिले में ।

बहाव क्षेत्र :- झालावाड़ तथा कोटा एवं बारां जिले की सीमा पर बहती हुई कोटा जिले में नौनेरा नामक स्थान पर चंबल से मिल जाती है ।

सहायक नदियाँ :- आहू, परवन, निवाज (निमाज), उजाड़ ।

अध्याय – 8

राजस्थान में खनिज संसाधन

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान में पाए जाने वाले प्रमुख खनिज संसाधनों का अध्ययन करेंगे सबसे पहले हम समझते हैं कि खनिज संसाधन किसे कहते हैं।

खनिज

- खनिज :- वे प्राकृतिक पदार्थ हैं जो कि भू-गर्भ से खनन क्रिया द्वारा बाहर निकाले जाते हैं। खनिज प्रमुखतया प्राकृतिक एवं रासायनिक पदार्थों के संयोग से निर्मित होते हैं।
- इनका निर्माण अजैविक प्रक्रियाओं के द्वारा होता है। सामान्य शब्दों में, वे सभी पदार्थ जो कि खनन द्वारा प्राप्त किए जाते हैं, खनिज कहलाते हैं।
- जैसे – लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससे एल्युमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तान व भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि।
- ऐसे खनिज जिनमें धातु की मात्रा अधिक होती है तथा उनसे धातुओं का निष्कर्षण करना आसान होता है उन्हें अयस्क कहते हैं।

जैसे-

धातु	**अयस्क**
हेमेटाइट	लोहा
बॉक्साइट	एल्युमिनियम
गैलेना	सीसा
डोलोमाइट	मैंग्नीशियम
सिडेराइट	लोहा
मेलाकाइट	तांबा

खनिजों के प्रकार

खनिज तीन प्रकार के होते हैं; धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिज।

धात्विक खनिज:

लौह धातु: लौह अयस्क, मैंगनीज, निकेल, आदि।

अलौहधातु: तांबा, लैंड, टिन, बॉक्साइट, कोबाल्ट आदि।

बहुमूल्य खनिज: सोना, चाँदी, प्लेटिनम, आदि।

अधात्विक खनिज:

अभ्रक, लवण, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, चूना, पत्थर, संगमरमर, बलुआ, पत्थर, आदि।

ऊर्जा खनिज: कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस।

खनिज के भंडार:

- आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में : - इस प्रकार की चट्टानों में खनिजों के छोटे जमाव शिराओं के रूप में, और बड़े जमाव परत के रूप में पाये जाते हैं ।
- जब खनिज पिघली हुई या गैसीय अवस्था में होती है तो खनिज का निर्माण आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में होता है ।
- पिघली हुई या गैसीय अवस्था में खनिज दरारों से होते हुए भूमि की ऊपरी सतह तक पहुँच जाते हैं ।

उदाहरण: टिन, जस्ता, लैंड, आदि।

अवसादी चट्टानों में: - इस प्रकार की चट्टानों में खनिज परतों में पाये जाते हैं ।

I. मुख्यतः अधात्विक ऊर्जा खनिज पाए जाते हैं।

उदाहरण: कोयला, लौह अयस्क, जिप्सम, पोटाश लवण और सोडियम लवण, आदि।

धरातलीय चट्टानों के अपघटन के द्वारा: - जब अपरदन द्वारा शैलों के घुलनशील अवयव निकल जाते हैं तो बचे हुए अपशिष्ट में खनिज रह जाता है । बॉक्साइट का निर्माण इसी तरह से होता है।

जलोढ़ जमाव के रूप में : - इस प्रकार से बनने वाले खनिज नदी के बहाव द्वारा लाए जाते हैं और जमा होते हैं । इस प्रकार के खनिज रेतीली घाटी की तली और पहाड़ियों के आधार में पाए जाते हैं । ऐसे में वो खनिज मिलते हैं जिनका अपरदन जल द्वारा नहीं होता है । उदाहरण: सोना, चाँदी, टिन, प्लेटिनम, आदि।

महासागर के जल में: - समुद्र में पाए जाने वाले अधिकतर खनिज इतने विरल होते हैं कि इनका कोई आर्थिक महत्व नहीं होता है । लेकिन समुद्र के जल से साधारण नमक, मैंग्नीशियम और ब्रोमीन निकाला जाता है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान में खनिज संसाधन –

प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

- जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहाँ पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है । और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है ।
- **खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है ।** राजस्थान में देश का कुल खनन क्षेत्र का 5.7% क्षेत्रफल आता है । देश में **सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित है ।** देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।
- राजस्थान में खनिज मुख्य रूप से अरावली में पाए जाते है । अतः इसे खनिजों का भण्डारगृह कहा जाता है ।

राजस्थान की भूमिका :-

भंडारण में	उत्पादन में	विविधता में	आय में
द्वितीय स्थान	द्वितीय स्थान	प्रथम स्थान	पाँचवा स्थान
	(57 प्रकार के खनिज)	81 प्रकार के	

राजस्थान में 81 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं वह कौन - कौन से खनिज यहाँ पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है -

   पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट

2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -

   जस्ता - 97%, फ्लोराइड 96%, **एस्बेस्टस** 96 %, रॉकफोस्फेट 95%, जिप्सम 94 % चूना पत्थर 98%, खड़िया मिट्टी 92%, घीया पत्थर 90%, चांदी 80%, मकराना (मार्बल) 75%, सीसा 75%, **फेल्सपार** 75%, टंगस्टन 75%, कैल्साइट 70%, फायर क्ले 65%, ईमारती पत्थर 60%, बेंटोनाइट 60%, कैडमियम 60%

3. वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है - लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज तेल, ग्रेफाइट

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है -

1. **धात्विक खनिज** – लौह अयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, सीसा, जस्ता, तांबा, चांदी इत्यादि।
2. **अधात्विक खनिज** - अभ्रक, एस्बेस्टस, फेल्सपार, बालुका मिट्टी, चूना पत्थर, पन्ना, तामड़ा इत्यादि।
3. **ईंधन** - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज इत्यादि।

   खनिजों की दृष्टि से राजस्थान में अरावली प्रदेश और पठारी प्रदेश काफी समृद्ध है।

- **धात्विक खनिज –**

धात्विक खनिज

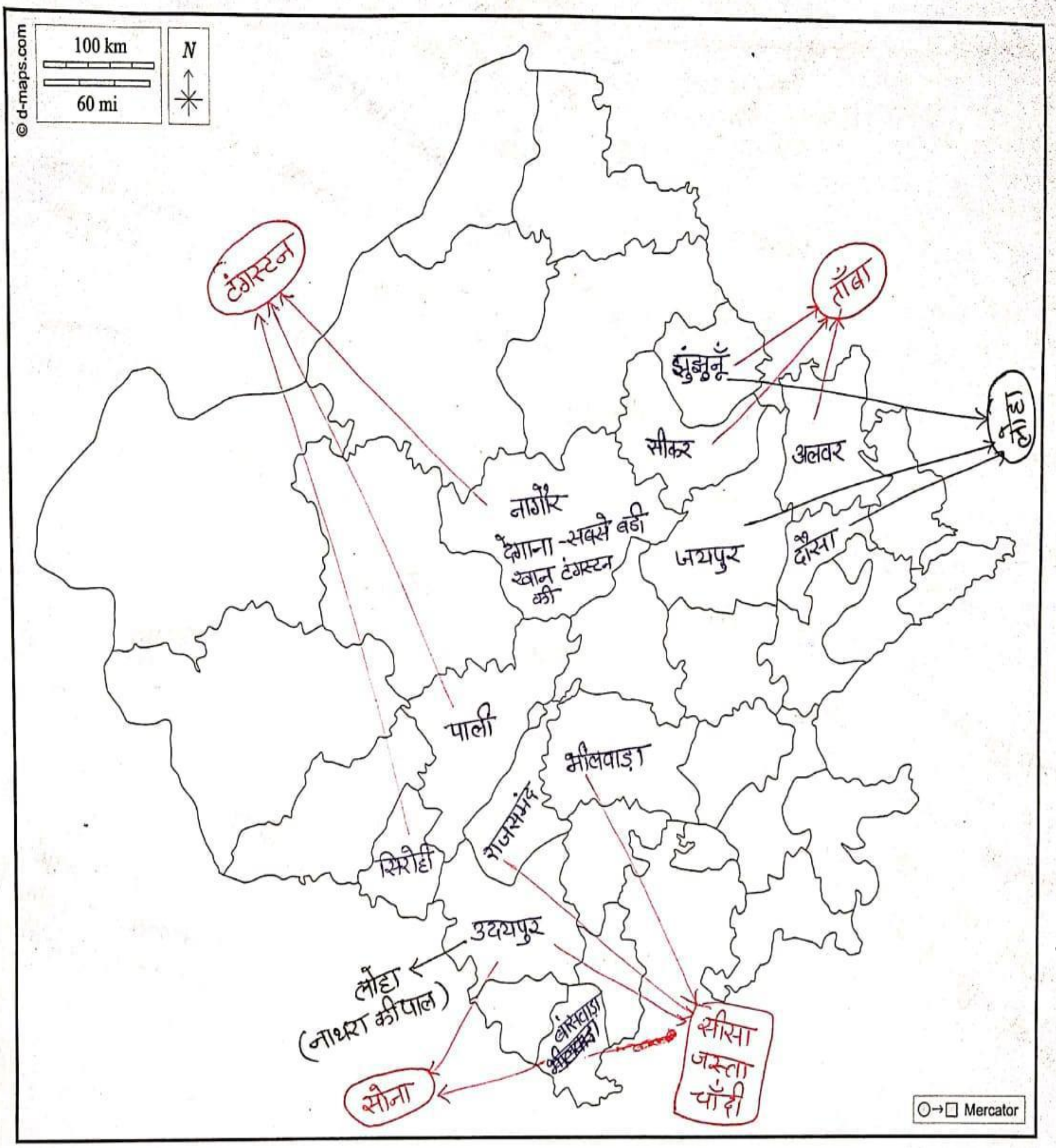

I. **लोहा** –राजस्थान में लोहा मुख्य रूप से अरावली के उत्तर – पूर्व एवं दक्षिण- पूर्व में पाया जाता है। लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है-

i. मैग्नेटाइट	-	74 %
ii. हेमेटाइट	-	65 %
iii. लिमोनाइट	-	50 %
iv. सिडेराइट	-	40%

→राजस्थान में मुख्य रूप से लोहे का उत्पादन निम्न स्थानों पर होता है एवं राजस्थान में हेमेटाइट व लिमोनाइट लौह अयस्क पाया जाता है।

प्रमुख खान-

- मोरिजा- बानोल- जयपुर
- नीमला- राइसेला- दौसा
- सिंघाना- डाबला–झुंझुनूं
- नीम का थाना- सीकर
- थूर हुण्डेर - उदयपुर
- नाथरा की पाल – उदयपुर

गुलाबी	-	भरतपुर
पीला एवं बीटदार	-	जैसलमेर
बादामी	-	जोधपुर
काला	–	भैंसलाना(जयपुर)
हरा	-	उदयपुर
गुलाबी लहरदार	-	राजसमंद
लाल	-	धौलपुर, करौली

नोट :- धौलपुर के लाल संगमरमर से राष्ट्रपति भवन का निर्माण किया गया हैं।

मकराना के सफेद संगमरमर को कैल्साइट के नाम से जाना जाता है।

खेरवाड़ा उदयपुर :-

*राजस्थान सरकार के द्वारा **हाल ही में खेरवाड़ा उदयपुर की खान को प्रदूषण मुक्त खान का प्रमाण पत्र जारी किया गया है।***

8. टंगस्टन *:-इस खनिज का उपयोग विद्युत उपकरणों, रक्षा उपकरणों एवं वस्तुओं को काटने आदि में किया जाता है । इसके अयस्क को बुलकोमाइट कहा गया है।*

1. डेगाना- भाकरी *:- यह **देश की सबसे बड़ी टंगस्टन परियोजना** है (सबसे बड़ी खान), नागौर के डेगाना नामक स्थान पर रैव की पहाड़ियों में स्थित है।*

2. वाल्दा क्षेत्र *:- राजस्थान राज्य टंगस्टन विभाग के द्वारा वालदा में भी टंगस्टन का खनन प्रारंभ कर दिया गया है।*

- *आबू रेवदर - सिरोही*
- *सेवरिया - पाली*
- *पीपलिया - पाली*

<u>अधात्विक खनिज</u>

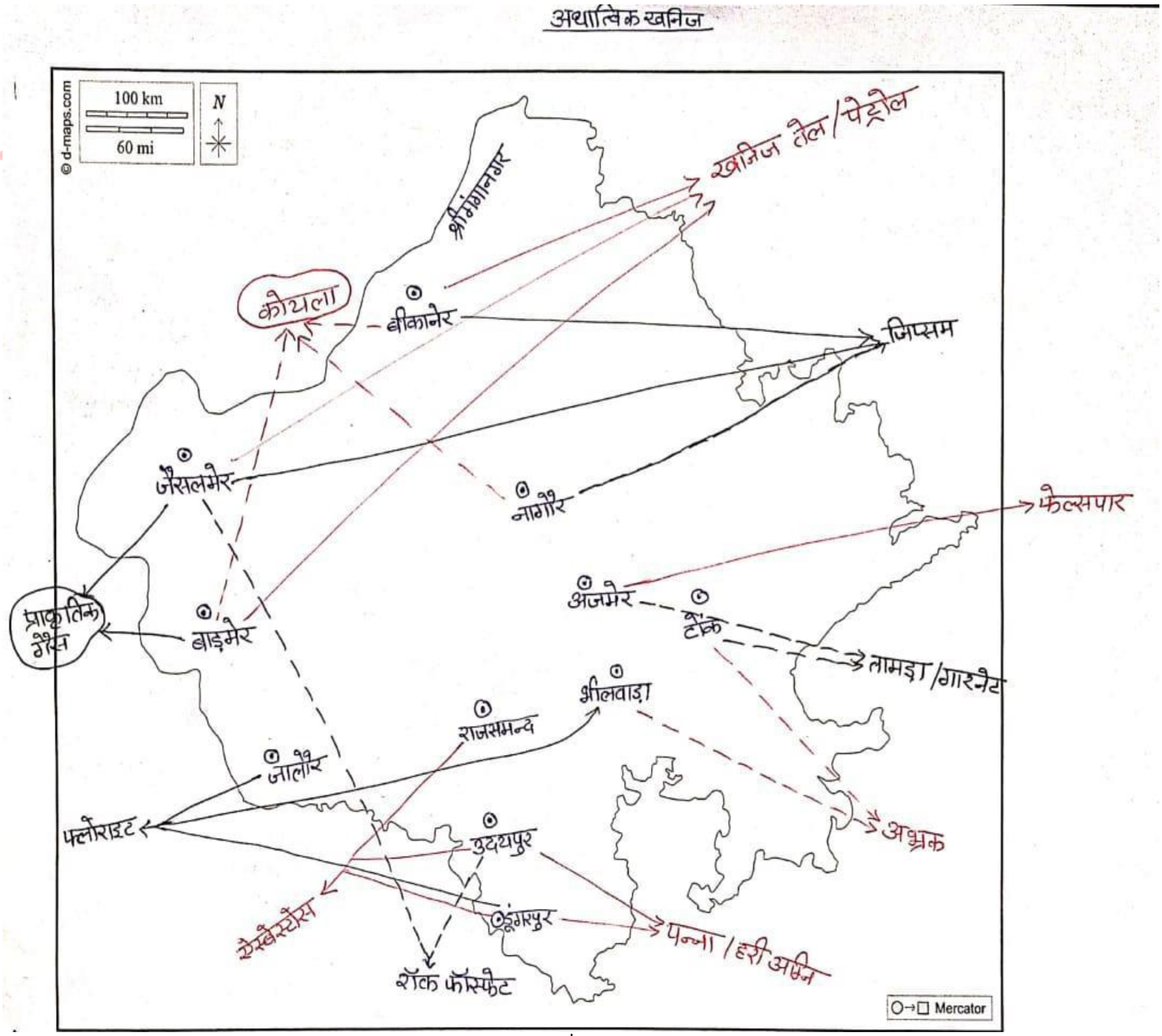

हरसौंठ/ कैल्शियम सल्फेट । इसका रेवदार रूप सैलेनाइट कहलाता है एवं इसको सुखाने पर P.O.P. (Plastic of Paris) की प्राप्ति होती हैं एवं राजस्थान में क्षारीय भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए जिप्सम का उपयोग किया जाता है ।

- इसके अलावा रासायनिक खाद, रंग रोगन एवं गंधक का तेजाब के निर्माण में भी इसका उपयोग किया जाता है।

इसका **सर्वाधिक उत्पादन नागौर जिले में होता है।**

प्रमुख क्षेत्र

- गोठ–मांगलोद- नागौर (सर्वाधिक)
- भदवासी- नागौर
- बिसरासर- राज्य की सबसे बड़ी खान - बीकानेर
- जामसर - राज्य का सबसे बड़ा जमाव - बीकानेर

चूना-पत्थर

- यह मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों में पाया जाता है।
- चूना पत्थर की खानों में अगर 45 % से अधिक मेंग्नीशियम हो तो उसे 'डोलोमाइट' कहा जाता है।
- स्टील ग्रेड चूना पत्थर - जैसलमेर के सानू क्षेत्र में।
- सीमेंट ग्रेड - चितौड़गढ

कैमिकल ग्रेड चूना पत्थर - जोधपुर व नागौर

नोट:- गोटन (नागौर) में भी चूना पत्थर पाया जाता है।

2. अभ्रक

- अभ्रक आग्नेय एवं कायांतरित चट्टानों में काले रंग के टुकड़ों के रूप में पाया जाता है।
- इसका उपयोग विद्युत उद्योगों में, सजावटी सामानों में एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।
- यह ताप का कुचालक होता है।
- माइकेनाइट उद्योग - अभ्रक के चूरे से ईंट तथा चादरें बनाने वाले उद्योग को माइकेनाइट उद्योग कहा जाता है।
- इस उद्योग के सर्वाधिक कारखानें भीलवाड़ा जिले में पाये जाते है।
- अभ्रक को खनिजों का बीमार बच्चा कहा जाता है, क्योंकि देश की 20 बड़ी अभ्रक की खानों से कुल उत्पादन का मात्र 50% प्राप्त होता है

रूबी अभ्रक

- सफेद अभ्रक को रूबी अभ्रक कहा जाता है।

बायोटाइट अभ्रक

- गुलाबी अभ्रक को बायोटाइट अभ्रक कहा जाता है।
- इसका उपयोग दवाईयाँ, सजावटी सामान, वायुयान एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र

1. भीलवाड़ा - शाहपुरा, पोटला, फुलिया, नट की खेड़ी।

अभ्रक का सर्वाधिक उत्पादन भीलवाड़ा में होता है

2. अजमेर- ब्यावर, जालिया, भिनाय

3. उदयपुर

4. जयपुर - बंजारीखान

राजस्थान अभ्रक का उत्पादन की दृष्टि से दूसरा स्थान है।

3. रॉक फास्फेट

जिन चट्टानों में डाई कैल्सियम फास्फेट का प्रतिशत अधिक पाया जाता है उन्हें रॉक फास्फेट चट्टान कहा जाता है।

- इसका उपयोग रासायनिक खाद के उत्पादन में अत्यधिक किया जाता है।

क्षेत्र

1. **झामरकोटड़ा (उदयपुर)-देश की सबसे बडी रॉक फास्फेट खान**

- इसके अलावा उदयपुर के माटोन, कानपुरा, नीमच आदि से भी इनका उत्पादन होता है।

2. जैसलमेर- लाठी, बिरमानिया क्षेत्र, फतेहगढ़

3. जयपुर- अचरोल

4. सीकर- करपुरा

4. एस्बेस्टॉस (90%) (मिनरलसिल्क)

उपयोग- सीमेंट, चादर, रेल के डिब्बे, जहाज, टाइल्स।

एस्बेस्टॉस के दो प्रकार होते है -

1. क्राइसोलाइट

2. एम्फीबोलाइट

एम्फीबॉल - यह घटिया किस्म का एस्बेस्टॉस राजस्थान में पाया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र :

1. उदयपुर - खेरवाड़ा, ऋषभदेव, सलूम्बर

2. राजसमन्द- तिरवी

3. डूंगरपुर- देवल, खेमारू, नलवा

4. भीलवाड़ा

5. पाली

6. अजमेर

5. फेलस्पार

यह एक ऐसा खनिज है, जो स्वतंत्र रूप से प्राप्त नहीं होता है। इसके साथ पोटाश व सोड़ास्पर पाया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र

1. अजमेर → मकरेडा→ सर्वाधिक फेल्सपार → 96%

2. भीलवाडा→माण्डल व आसींद

3. पाली→चनोदिया

4. अलवर→खैरथल

उपयोग→चीनी मिट्टी के बर्तनों में उपयोग।

काँच बालूका

उत्तर प्रदेश के बाद राजस्थान का दूसरा स्थान है।

प्रमुख क्षेत्र

1. जयपुर→ झर, कानोता, बासखों (सबसे अधिक उत्पादन)

2. बूंदी → बड़ोदिया

चीनी मिट्टी

इसका उपयोग रबर उद्योग, पेन्ट्स, सीमेंट आदि में किया जाता है।

उत्पादन क्षेत्र

1. सवाई माधोपुर →वसुव, रायसीना, चौथ का बरवाड़ा (सबसे अधिक चीनी मिट्टी)

2. सीकर→गोवर्द्धनपुरा, टोरडा, वूचरा

नोट :- चीनी मिट्टी का उचित उपयोग करने के लिए इस की धुलाई अनिवार्य है।

इसकी धुलाई का कारखाना नीम का थाना (सीकर) में स्थापित कि यागया है।

डोलोमाइट

पाउडर एवं चूना बनाने में उपयोग किया जाता है।

राजस्थान में सबसे अधिक उत्पादन जयपुर जिले (48%) में, अलवर (23%), सीकर (15%) में होता है।

नोट :- हाल ही में राजसमंद जिले के मटकेश्वर क्षेत्र में डोलोमाइट के भण्डारों का पता चला है।

वोलेस्टोनाइट (100%)

उपयोग- रंग रोगन, कागज उद्योग, रासायनिक उद्योग । **राजस्थान में सर्वाधिक उत्पादन सिरोही जिले में होता है।**

प्रमुख क्षेत्र

1. सिरोही→खिल्ला, बैटका, बेल का मगरा

2. उदयपुर→बडाऊ परला खेड़ा, सायरा

3. डूंगरपुर

4. अजमेर

यूरेनियम

उपयोग– परमाणु विखण्डन में

यूरेनियम का सर्वाधिक उत्पादन उदयपुर जिले से होता है । इसके अलावा भीलवाड़ा, सीकर व टोंक जिले से इसका उत्पादन होता है।

यूरेनियम

- उमरा - उदयपुर
- खंडेला पहाड़ी तथा रोहिला क्षेत्र- सीकर

Note - हाल ही में राजस्थान में रोहिल गांव, खंडेला तहसील जिला - सीकर में लगभग 1.2 करोड़ टन यूरेनियम के भंडार मिले हैं।

- देश में यूरेनियम सर्वाधिक केरल में 'मोनोजाइट रेत' से प्राप्त होता है।

थोरियम -

- भद्रावन (पाली) तथा सरदारपुरा (भीलवाड़ा) में थोरियम का उत्पादन होता है ।

अध्याय – 9

जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, एवं लिंगानुपात

2021 की अनुमानित जनसंख्या

2020 में राजस्थान की अनुमानित जनसंख्या	79,502,477
2021 में पुरुषों की अनुमानित जनसंख्या	41,235,725
2021 में महिलाओं की अनुमानित जनसंख्या	38,266,753

2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या

2011 में राजस्थान की कुल आबादी	**68,548,437**
पुरुषों की जनसंख्या	35,554,169
महिलाओं की जनसंख्या	32,994,268
भारत की जनसंख्या (प्र.)	**5.66%**
लिंग अनुपात	928
बच्चों का लिंग अनुपात	888
घनत्व (प्रति वर्ग कि.मी.)	200
घनत्व (मील प्रति वर्ग)	519
क्षेत्र (प्रति वर्ग कि.मी.)	342,239
क्षेत्र (मील प्रति वर्ग)	132,139
बच्चों की जनसंख्या 0-6 वर्ष	10,649,504
लड़कों की जनसंख्या 0-6 वर्ष	5,639,176
लड़कियों की जनसंख्या 0-6 वर्ष	5,010,328
साक्षरता	**66.11%**
साक्षरता पुरुष (प्र.)	79.19%
साक्षरता महिलाएं (प्र.)	52.13%
कुल साक्षर	38,275,282
साक्षर पुरुष	23,688,412
साक्षर महिलाएं	14,586,870

राजस्थान की आबादी - धर्म के अनुसार विवरण

धर्म	2011 जनसंख्या	प्रतिशत	2021 की अनुमानित जनसंख्या
हिंदू	60,657,103	**88.49%**	70,350,108
मुसलमान	6,215,377	**9.07%**	7,208,594
ईसाई	96,430	0.14%	111,840
सिख	872,930	1.27%	1,012,424
बौद्ध	12,185	0.02%	14,132
जैन	622,023	0.91%	721,422
अघोषित	67,713	0.10%	78,534
अन्य	4,676	0.01%	5,423
कुल	**68,548,437**	**100.00%**	**79,502,477**

राजस्थान जनसंख्या तथ्य

विवरण	जिला	2011 के अनुसार
सबसे अधिक जनसंख्या वाला जिला	जयपुर	6,626,178
सबसे कम जनसंख्या वाला जिला	जैसलमेर	6,69,919
सबसे अधिक लिंगानुपात वाला जिला	डूंगरपुर	994
सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला	धौलपुर	846
सबसे अधिक साक्षरता वाला जिला	कोटा	76.56%
सबसे कम साक्षरता वाला जिला	जालौर	54.86%

राजस्थान के जिलों की जनसंख्या, लिंग अनुपात और साक्षरता

क्र.	जिला	2011 के अनुसार जनसंख्या	लिंग अनुपात	साक्षरता	2021 की अनुमानित जनसंख्या
1.	अजमेर	2,583,052	951	69.33%	2,995,824
2.	अलवर	3,674,179	895	70.72%	4,261,313
3.	बाँसवाड़ा	1,797,485	980	56.33%	2,084,723
4.	बारां	1,222,755	929	66.66%	1,418,151
5.	बाड़मेर	2,603,751	902	56.53%	3,019,830
6.	भरतपुर	2,548,462	880	70.11%	2,955,706
7.	भीलवाड़ा	2,408,523	973	61.37%	2,793,405
8.	बीकानेर	2,363,937	905	65.13%	2,741,694

अध्याय – 2

मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्

- मुख्यमंत्री किसी राज्य की कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान होता है । वह राज्य विधानसभा का नेता होता है । राज्य की सर्वोच्च कार्यपालिका शक्ति मुख्यमंत्री के हाथों में है । वह राज्य का वास्तविक शासक/तथ्यत प्रमुख / डी-फैक्टो हेड होता है ।
- मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल के द्वारा संविधान के **अनुच्छेद 164 (1)** के तहत् की जाती है ।
- सामान्यत , राज्यपाल बहुमत प्राप्त दल के नेता को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है । लेकिन यदि चुनावों में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है , उस स्थिति में राज्यपाल स्वविवेक से मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। उसे एक माह के भीतर सदन में विश्वास मत प्राप्त करने के लिए कहता है ।

राज्यपाल स्वविवेक द्वारा मुख्यमंत्री की नियुक्ति ऐसे समय पर करता है जब कार्यकाल के दौरान किसी मुख्यमंत्री की मृत्यु हो जाए और कोई उत्तराधिकारी तय नहीं हो या चुनावों में किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ हो ।

NOTE- केन्द्र शासित प्रदेशों में (जहाँ विधानसभा है) मुख्यमंत्रियों की नियुक्ति , राष्ट्रपति करता है । वर्तमान में भारत के तीन केन्द्र शासित प्रदेशों क्रमशः पुदुच्चेरी, दिल्ली और जम्मू- कश्मीर में विधानसभाओं का प्रावधान है ।

- **अनुच्छेद 164 (3)** मुख्यमंत्री व मंत्रियों को शपथ राज्यपाल दिलाता है । राज्य का मुख्यमंत्री कार्यग्रहण से पूर्व राज्यपाल के समक्ष पद व गोपनीयता की शपथ ग्रहण करता है। मुख्यमंत्री व मंत्रियों की शपथ का प्रारुप **भारतीय संविधान की अनुसूची 3** में मिलता है ।

अनुच्छेद 164 (4) मुख्यमंत्री एवं मंत्रियों की योग्यता भारतीय संविधान में मुख्यमंत्री पद के लिए योग्यताएँ आवश्यक है जो एक मंत्री पद के लिए होती है । जैसे– (1) न्यूनतम आयु 25 वर्ष हो । (2) राज्य विधानमण्डल के दोनों में से किसी एक सदन का सदस्य हो ।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानमण्डल के किसी भी सदन का सदस्य न भी हो तो 6 माह तक मुख्यमंत्री रह सकता है । 6 माह के भीतर उसे विधानमण्डल के किसी एक सदन की सदस्यता ग्रहण करनी पड़ती है अन्यथा त्यागपत्र देना पड़ता है । मुख्यमंत्री सामान्यतः विधानमण्डल के निम्न सदन (विधान सभा) का सदस्य होता है, लेकिन उच्च सदन (विधान परिषद्) के सदस्य को भी मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है यदि उस राज्य में द्विसदनात्मक विधान मण्डल है तो ।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानपरिषद् का सदस्य है तो वह

(i) राष्ट्रपति के चुनाव में भाग नहीं ले सकता।

(ii) वह अविश्वास प्रस्ताव पर वोट नहीं कर सकता है क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव विधानसभा में लाया जाता है ।

- **अनुच्छेद 164 (5)** मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों व कार्यकाल

मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों का निर्धारण राज्य विधानमण्डल द्वारा किया जाता है । वर्तमान में राजस्थान के मुख्यमंत्री को 75,000 रु प्रतिमाह वेतन मिलता है । (1 अप्रेल , 2019 के बाद) स्मरणीय तथ्य : मुख्यमंत्री का कार्यकाल 5 वर्ष होता है , परन्तु वह राज्यपाल के प्रसादपर्यंत अपने पद पर बना रहता है । अर्थात् जब तक कि उसका विधानसभा में बहुमत है । लेकिन यदि मुख्यमंत्री विधानसभा में अपना बहुमत खो देता है तो उसे त्यागपत्र दे देना चाहिए अन्यथा राज्यपाल उसे बर्खास्त कर सकता है । मुख्यमंत्री अपना त्यागपत्र राज्यपाल को देता है । और मुख्यमंत्री का त्यागपत्र समस्त मंत्रिपरिषद् का त्यागपत्र माना जाता है ।

अनुच्छेद 164 (2) - राज्य की मंत्रिपरिषद् सामूहिक रुप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है ।

मुख्यमंत्री के कार्य एवं शक्तियाँ

मंत्रिपरिषद् के संबंध में

- मुख्यमंत्री की सलाह से राज्यपाल द्वारा मंत्रियों की नियुक्ति की जाती है ।

- मुख्यमंत्री , मंत्रियों के मध्य विभागों का बंटवारा करता है और उनमें फेरबदल भी करता है । मतभेद होने पर वह किसी भी मंत्री को त्यागपत्र देने के लिए कह सकता है या राज्यपाल को उसे बर्खास्त करने का परामर्श दे सकता है ।
- मुख्यमंत्री, मंत्रिपरिषद् एवं मंत्रिमण्डल की बैठकों की अध्यक्षता करता है ।

NOTE- मुख्यमंत्री की अनुपस्थिति में सबसे वरिष्ठ मंत्री मंत्रिमण्डल की अध्यक्षता करता है।

- वह सभी मंत्रियों को उनके कार्यों में परामर्श देता है तथा उनके कार्यों पर नियंत्रण भी रखता है ।
- मुख्यमंत्री , राज्यपाल और मंत्रिपरिषद् के बीच की कड़ी के रूप में कार्य करता है ।

अनुच्छेद 164 (1) क - इस अनुच्छेद को 91 वें संविधान संशोधन 2003 द्वारा जोड़ा गया । इसमें राज्य मंत्रिपरिषद् का आकार निश्चित किया गया। राज्य मंत्रिपरिषद् में मुख्यमंत्री सहित अधिकतम मंत्री उस राज्य की कुल विधानसभा सीटों का 15 % तथा मुख्यमंत्री सहित न्यूनतम मंत्री 12 होंगे ।

राज्यपाल के संदर्भ में

अनुच्छेद 167- इसमें मुख्यमंत्री के संवैधानिक कर्त्तव्यों का उल्लेख मिलता है ।

(i) वह मंत्रिपरिषद् द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों के लिए सभी निर्णयों तथा विधायन के प्रस्तावों के बारे में राज्यपाल को सूचित करें।

(ii) राज्यपाल द्वारा राज्य के प्रशासन से संबंधित मामलों अथवा विधायन प्रस्तावों के बारे में माँगे जाने पर सूचना प्रदान करना।

(iii) यदि राज्यपाल चाहे तो मंत्रिपरिषद् के समक्ष किसी ऐसे मामले को विचारार्थ रखे जिस पर निर्णय तो किसी मंत्री द्वारा लिया जाना है लेकिन जिस पर मंत्रिपरिषद् विचार नहीं किया है ।

NOTE- राज्य की प्रमुख संवैधानिक संस्था जैसेः- राज्य के महाधिवक्ता (अनुच्छेद-165), राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद 243 I-पंचायतीराज, अनुच्छेद 243 Y- नगर निकायों के लिए) तथा राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों (अनुच्छेद-316) राज्य निर्वाचन आयुक्त (अनुच्छेद 243 K-पंचायतीराज व अनुच्छेद 243 ZA- नगर निकायों के लिए) की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा मंत्रिपरिषद की सलाह (विशेषतया मुख्यमंत्री) की जाती है।

NOTE-राज्य के प्रमुख सांविधिक/ वैधानिक निकायों जैसेः- राजस्थान मानवाधिकार आयोग, राजस्थान सुचना आयोग के अध्यक्षों व सदस्यों तथा लोकायुक्त संस्था के अध्यक्ष की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा एक चयन समिति की सिफारिश पर की जाती है जिसका अध्यक्ष मुख्यमंत्री होता।

NOTE-राजस्थान महिला आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति राज्य सरकार (मुख्यमंत्री) द्वारा की जाती है।

राज्य विधानमण्डल के संबंध में

- मुख्यमंत्री , राज्यपाल को किसी भी समय विधानसभा विघटित करने की सिफारिश कर सकता है ।
- मुख्यमंत्री ही राज्य विधानसभा के पटल पर सरकार की नीतियों की घोषणा करता है ।
- मुख्यमंत्री , राज्यपाल को सत्राहूत व सत्रावसान के संबंध में सलाह देता है ।

मुख्यमंत्री के अन्य कार्य

- राज्य आयोजना बोर्ड के अध्यक्ष होते है ।
- अंतर्राज्यीय परिषद (अनुच्छेद 263) के सदस्य होते है।
- राष्ट्रीय विकास परिषद के सदस्य होते है ।
- नीति आयोग के सदस्य होते है ।
- वह संबंधित क्षेत्रीय परिषदों के क्रमवार उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते है तथा एक समय में इनका कार्यकाल1 वर्ष का होता है ।
- मुख्यमंत्री राज्य सरकार का मुख्य प्रवक्ता तथा आपातकाल के समय वह राजनीतिक स्तर पर मुख्य प्रबंधक होता है ।

राजस्थान में मुख्यमंत्री

पं. हीरालाल शास्त्री

- 30 मार्च, 1949 को राजस्थान के एकीकरण के चतुर्थ चरण के समय जब 14 देशी रियासतों का

विलय कर वृहद राजस्थान संघ का निर्माण किया गया तब जयपुर रियासत के पूर्व प्रधानमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री को 30 मार्च, 1949 को ही नये राज्य का प्रधानमंत्री मनोनीत किया गया ।

- उन्होंने राजस्थान के प्रधानमंत्री के तौर पर 5 जनवरी, 1951 तक कार्य किया । देश में 26 जनवरी, 1950 को संविधान के लागू होने के बाद प्रधानमंत्री पद का नाम बदल कर मुख्यमंत्री कर दिया गया ।
- हीरालाल शास्त्री राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री रहे ।
- हीरालाल शास्त्री के समय 30 मार्च , 1949 को राजस्थान में संभागीय व्यवस्था की शुरुआत की गई ।
- हीरालाल शास्त्री एक बार लोकसभा सांसद भी रहे ।

सी.एस. वैंकटाचार्य (कदांबी शेषाटार वैंकटाचार्य)

- हीरालाल शास्त्री को लेकर मतभेद पैदा हो गया और अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से उन्हें पद से हटा दिया गया । उनकी एवज में आई.सी.एस. अधिकारी श्री सी.एस. वैंकटाचारी को मुख्यमंत्री का कार्यभार दे दिया गया ।
- राजस्थान के दूसरे मनोनीत मुख्यमंत्री (6 जनवरी, 1951 से 25 अप्रैल, 1951) बने ।
- सी.एस. वैंकटाचार्य रियासती काल में बीकानेर व जोधपुर के प्रधानमंत्री भी रहे ।

<u>जय नारायण व्यास</u>

- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो कि मनोनीत (26 अप्रैल, 1951 से 3 मार्च, 1952) व निर्वाचित (1 नवम्बर, 1952 से 13 नवम्बर, 1954) दोनों रहे ।
- प्रथम विधानसभा चुनाव में दो सीटों (जोधपुर शहर - बी व जालौर - ए) से चुनाव लड़ा , लेकिन दोनों सीटों से हार गये । लेकिन बाद में किशनगढ़ सीट से चांदमल मेहता को इस्तीफा दिलवाकर सीट खाली की तथा उपचुनाव जीतकर राजस्थान के दूसरे निर्वाचित मुख्यमंत्री बने ।
- जयनारायण व्यास एक बार राज्य सभा सांसद भी रहे ।
- जयनारायण व्यास , मुख्यमंत्री बनने के पूर्व किसी भी मंत्रिपरिषद् में मंत्री नहीं रहे ।

NOTE- राजस्थान में तीन मनोनीत मुख्यमंत्री बने (1) हीरालाल शास्त्री (2) सी.एस. वैंकटाचार्य (3) जयनारायण व्यास

<u>टीकाराम पालीवाल</u>

- टीकाराम पालीवाल प्रदेश के पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री (3 मार्च, 1952 से 1 नवम्बर, 1952) बने । इससे पहले के सभी मुख्यमंत्री मनोनीत किये गए थे ।
- जयनारायण व्यास के किशनगढ़ सीट से उपचुनाव जीतने के बाद इनको मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र देना पड़ा व इन्हें उपमुख्यमंत्री बनाया गया ।
- एकमात्र व्यक्ति जो राजस्थान के मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री दोनों पदों पर रहे ।
- यह राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री व प्रथम उपमुख्यमंत्री बने ।
- यह लोकसभा व राज्यसभा सांसद भी रहे ।

<u>मोहनलाल सुखाड़िया</u>

- सुखाड़िया जी ने कांग्रेस विधायक दल के नेता के चुनाव में जयनारायण व्यास को हराकर मात्र 38 साल की उम्र में प्रदेश का सबसे युवा मुख्यमंत्री बनने का गौरव प्राप्त किया ।
- 13 नवम्बर, 1954 को उन्होंने राज्य की कमान संभाली ।
- इस के बाद वे वर्ष 1957 में दूसरी बार, वर्ष 1962 में तीसरी बार और वर्ष 1967 में लगातार चौथी बार मुख्यमंत्री बने ।
- चौथी बार उन्हे अविश्वास प्रस्ताव से पद से हटाने का प्रयास किया गया लेकिन 26 अप्रैल, 1967 को उन्होंने अपना बहुमत सिद्ध करने के बाद 8 जुलाई, 1971 को पद से इस्तीफा दे दिया ।
- सुखाड़िया जी को आधुनिक राजस्थान का निर्माता कहा जाता है ।
- इनके पिता पुरुषोत्तमदास सुखाड़िया चर्चित क्रिकेटर थे ।
- सर्वाधिक कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री , 1954 से 1971 तक (17 वर्ष) , 4 बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे । इनके समय 2 अक्टूबर, 1959 को नागौर से पंचायतीराज की शुरुआत हुई तथा अप्रैल , 1962 में संभागीय व्यवस्था को बंद किया गया ।

- 4 मार्च 1990 को उन्हें दूसरी बार राजस्थान का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला । 15 दिसम्बर, 1992 को अयोध्या प्रकरण के कारण उनकी सरकार को बर्खास्त कर दिया गया ।
- वर्ष 1993 में एक बार फिर उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली और । दिसम्बर, 1998 तक इस पद पर अपनी सेवाएं दीं।
- भैंरोसिंह शेखावत तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे ।
- मुख्यमंत्री बनने से पूर्व राज्यसभा सांसद व विधायक भी रहे ।
- राजस्थान के एकमात्र ऐसे मुख्यमंत्री जो उपराष्ट्रपति भी बने ।
- राजस्थान में तीसरा (वर्ष 1980) व चौथा (वर्ष 1992) राष्ट्रपति शासन इन्हीं के समय लगा ।
- यह मुख्यमंत्री बनने से पूर्व किसी मंत्रिपरिषद् में मंत्री नहीं रहे ।
- यह तीन बार राजस्थान विधानसभा में विपक्ष के नेता रहे ।

अशोक गहलोत

- 1 दिसम्बर, 1998 को राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली ।
- 13 दिसम्बर, 2008 को उन्हें दूसरी बार राजस्थान का मुख्यमंत्री बनने का अवसर मिला ।
- वर्तमान (वर्ष 2018 से) मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पद के अनुसार 22वें तथा व्यक्ति के अनुसार 11वें निर्वाचित मुख्यमंत्री है । यदि मनोनीत को भी शामिल करे तो पद के अनुसार 25वें तथा व्यक्ति के अनुसार 13वें मुख्यमंत्री है ।
- यह वर्तमान में जोधपुर की सरदारपुरा सीट से निर्वाचित हुए है ।
- अशोक गहलोत ऐसे मुख्यमंत्री रहे जिनके कार्यकाल में दो उप-मुख्यमंत्री रहे (1) बनवारी लाल बैरवा (2) कमला बेनीवाल

उपमुख्यमंत्री

यह एक गैर - संवैधानिक पद है । यह एक परम्परा के तौर पर किसी राजनीतिक दल को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से सृजित किया जाता है।

उपमुख्यमंत्री	**मुख्यमंत्री**	**वर्ष**
टीकाराम पालीवाल	जयनारायण व्यास	1952-1954
हरिशंकर भाभड़ा	भैंरोसिंह शेखावत	1994-1998
बनवारी लाल बैरवा	अशोक गहलोत	2003
कमला बेनीवाल	अशोक गहलोत	2003
सचिन पायलट	अशोक गहलोत	2018

वसुन्धरा राजे

- वसुन्धरा राजे 8 दिसम्बर, 2003 को राजस्थान की प्रथम महिला मुख्यमंत्री बनी ।
- इसके बाद 13 दिसम्बर, 2013 को उन्हें दूसरी बार प्रदेश का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिला ।
- यह दो बार राजस्थान की मुख्यमंत्री रही यह पांच बार विधायक व 5 बार लोकसभा सांसद बनी।
- श्रीमती वसुंधरा राजे राजस्थान से सर्वाधिक बार लोकसभा सांसद बनने वाली महिला है ।
- वसुंधरा राजे राजस्थान विधानसभा में विपक्ष की नेता भी रही है।

NOTE- राजस्थान के तीन ऐसे मुख्यमंत्री जो विपक्ष / प्रतिपक्ष के नेता भी रहे :- (1) भैंरोसिंह शेखावत (तीन बार) (2) हरिदेव जोशी (एक बार) (3) वसुंधरा राजे (एक बार)

राजस्थान के मुख्यमंत्री

क्र.	मुख्यमंत्री	कार्यकाल
1.	श्री हीरालाल शास्त्री	07.04.1949 - 05.01.1951
2.	श्री सी.एस. वेंकटाचार्य	06.01.1951 - 25.04.1951
3.	श्री जयनारायण व्यास	26.04.1951 - 03.03.1952
4.	श्री टीकाराम पालीवाल	03.03.1952 - 31.10.1952
5.	श्री जयनारायणव्यास	01.11.1952 - 12.11.1954

6.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	13.11.1954 - 11.04.1957
7.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	11.04.1957 - 11.03.1962
8.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	12.03.1962 - 13.03.1967
9.	राष्ट्रपति शासन	13.03.1967- 26.04.1967
10.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	26.04.1967- 09.07.1971
11.	श्री बरकतुल्लाखां	09.07.1971- 11.10.1973
12.	श्री हरि देव जोशी	11.10.1973 - 29.04.1977
13.	राष्ट्रपति शासन	30.04.1977- 21.06.1977
14.	श्री भैंरोंसिंह शेखावत	22.06.1977 - 16.02.1980
15.	राष्ट्रपति शासन	17.02.1980 - 05.06.1980
16.	श्री जगन्नाथ पहाडिया	06.06.1980- 13.07.1981
17.	श्री शिवचरण माथुर	14.07.1981- 23.02.1985
18.	श्री हीरालाल देवपुरा	23.02.1985 - 10.03.1985
19.	श्री हरि देव जोशी	10.03.1985 - 20.01.1988
20.	श्री शिव चरण माथुर	20.01.1988- 04.12.1989
21.	श्री हरि देव जोशी	04.12.1989- 04.03.1990
22.	श्री भैंरों सिंह शेखावत	04.03.1990 - 15.12.1992
23.	राष्ट्रपति शासन	15.12.1992 - 03.12.1993
24.	श्री भैंरोंसिंह शेखावत	04.12.1993 - 01.12.1998
25.	श्री अशोक गहलोत	01.12.1998 - 08.12.2003
26.	श्रीमती वसुन्धरा राजे	08.12.2003- 13.12.2008
27.	श्री अशोक गहलोत	13.12.2008 - 13.12.2013
28.	श्रीमती वसुन्धरा राजे	13.12.2013 - 17.12.2018
29.	श्री अशोक गहलोत	17.12.2018 से लगातार...

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री- **हीरालाल शास्त्री**
- राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री- **टीकाराम पालीवाल**
- राजस्थान के प्रथम उपमुख्यमंत्री- **टीकाराम पालीवाल**
- एकमात्र व्यक्ति जो राजस्थान के मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री दोनों पदों पर रहे- **टीकाराम पालीवाल**
- राजस्थान के एकमात्र मुख्यमंत्री जो कि मनोनीत व निर्वाचित हुए- **जयनारायण व्यास**
- राजस्थान में सर्वाधिक कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**
- राजस्थान में न्यूनतम कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री- **हीरालाल देवपुरा**
- राजस्थान के सबसे युवा मुख्यमंत्री- **मोहनलाल सुखाड़िया**
- राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री जिनकी पद पर रहते हुए मृत्यु हुई- **बरकतुल्ला खां**

अध्याय – II

महिला एवं बाल अपराध

विश्व में समय – समय पर महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठती रही है। इनमें भारत भी शामिल है। भारत में महिलाएँ सामाजिक रीति – रिवाजों द्वारा शोषित और दमित होती रही हैं।

इन अपराधों के निवारण में कमी एवं रोक हेतु विधान की आवश्कता थी। इसलिए समय – समय पर भारतीय संसद ने महिलाओं से संबंधित विधि का निर्माण किया है। भारतीय संविधान में भी महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित करने करने के पूर्ण प्रयास किए गए हैं।

हिंसा - किसी व्यक्ति, समूह या समुदाय के विरुद्ध उन्हें किसी प्रकार के शारीरिक या मानसिक आघात पहुँचाने उद्देशों के लिए किये गए शक्ति के प्रयोग को हिंसा कहते हैं।

अपराध - जान बूझ कर किया गया कोई भी ऐसा कार्य जो समाज विरोधी हो या किसी भी प्रकार से समाज द्वारा निर्धारित आचरण का उल्लंघन अथवा जिसके लिए दोषी व्यक्ति को भारतीय दंड संहिता (आई.पी.सी) के अंतर्गत विधि द्वारा निर्धारित सजा दिया जाता हो ऐसे काम अपराध कहलाते हैं।

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर यह कहना गलत नही होगा कि हिंसा और अपराध दोनों का एक - दूसरे से सीधा संबंध रखते हैं। ऐसी कोई भी क्रिया - कलाप जिससे किसी व्यक्ति विशेष या समूह, समुदाय, समाज की भावनाएँ और स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े और व्यवस्थाओं में आवांछित प्रभाव पड़े, वे सभी हिंसा और अपराध के श्रेणी में रखें जायेंगे। अपराध को हम एक उदाहरण के तौर पर भी समझ सकते हैं -

अपराध मनुष्य जाति के लिए जंगल में लगी आग की भांति होती है अगर इसे समय रहते नहीं रोका जाए तो यह भयंकर विध्वंस का रूप धारण कर मानव जाति पर एक प्रश्न खड़ा कर सकती है।

महिला अपराधों से संबंधित अति महत्त्वपूर्ण विधि -

1. हिन्दू विधवा 'पुनर्विवाह अधिनियम, 1856
2. भारतीय दंड संहिता, 1860
3. भारतीय साक्ष्य, 1872 अधिनियम
4. भारतीय ईसाई विवाह अधिनियम, 1872
5. 1882 संपत्ति अधिनियम का स्थानांतरण
6. रखवालों और वार्ड अधिनियम, 1890
7. सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908
8. भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925
9. बाल विवाह निरोधक अधिनियम, 1929
10. संपत्ति अधिनियम, हिंदू महिलाओं के अधिकार, 1937
11. पारसी विवाह और तलाक अधिनियम, 1936
12. मुस्लिम विवाह का विघटन, अधिनियम 1939
13. कारखाना अधिनियम, 1948
14. कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948
15. भारत का संविधान, 1950
16. खान अधिनियम, 1952
17. विशेष विवाह अधिनियम, 1954
18. हिंदू विवाह अधिनियम, 1955
19. किशोर न्याय(बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 1956
20. हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956
21. हिंदू को गोद देने और भरण - पोषण अधिनियम, 1956
22. अनैतिक व्यापार (निवारण) अधिनियम, 1956
23. दहेज निषेध अधिनियम, 1961
24. मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961-1965
25. विदेश विवाह अधिनियम, 1969
26. गर्भावस्था अधिनियम की मेडिकल टर्मिनेशन, 1971
27. दंड प्रक्रिया संहिता, अधिनियम 1973
28. परिवार न्यायालय अधिनियम, 1984
29. महिलाओं के अश्लील प्रतिनिधित्व (निषेध) अधिनियम, 1986
30. मुस्लिम महिला (तलाक पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 1986
31. सती निवारण अधिनियम, 1987
32. विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987
33. जाति अनुसूचित और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम 1989
34. महिला अधिनियम, के लिए राष्ट्रीय आयोग, 1990
35. मानव अधिकारों के संरक्षण अधिनियम, 1993
36. पूर्व गर्भाधान और प्रसव पूर्व Dignostic तकनीक (लिंग चयन का प्रतिषेध), 1994 के कानून

37. पूर्व गर्भधारण और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (लिंग चयन का प्रतिषेध) अधिनियम, 1996
38. किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2000
39. गर्भावस्था के विनियम के मेडिकल टर्मिनेशन, 2003
40. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005
41. विधेयक के मसौदे "विवाह अधिनियम 2005 के अनिवार्य पंजीकरण"
42. वृद्धजन 'रख - रखाव, देख-भाल और संरक्षण विधेयक, 2005
43. महिलाओं का संरक्षण, अधिनियम 2005
44. घरेलू हिंसा कानून से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005
45. परिवार न्यायालय (संशोधन) विधेयक, 2005
46. निषेध का बाल विवाह अधिनियम, 2006
47. रख- रखाव और माता-पिता के कल्याण और वरिष्ठ नागरिक अधिनियम, 2007
48. राजस्थान महिला एवं बाल विकास (राज्य और अधीनस्थ) सेवा नियमावली, 1998
49. राजस्थान महिला विकास सेवा अधिनियम, 2008
50. घरेलू कामगार कल्याण और सामाजिक सुरक्षा अधिनियम 2010
51. 'ऑनर' के नाम में अपराधों की रोकथाम और परंपरा विधेयक, 2010
52. राजस्थान महिला (अत्याचार से रोकथाम और संरक्षण) का मसौदा विधेयक, 2011
53. कार्यस्थल (रोकथाम, निषेध और निवारण) में महिलाओं के यौन उत्पीड़न अधिनियम, 2013
54. आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 2013
55. राजस्थान विशेष न्यायालय (संशोधन) विधेयक, 2013

महिला संबंधित अपराध

विश्व भर में महिलाओं से संबंधित अपराध देखे जा सकते हैं । इनमें हमारा देश भी शामिल है । जिन्हें भारतीय समाज में भी देखा जाता है -
महिलाओं से संबंधित अपराधों की श्रेणी में उनके शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, यौन एवं भावनात्मक उत्पीड़न शोषण शामिल है । भारत में महिलाओं पर होने वाले अपराध चौंकाने वाले हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार प्रति वर्ष महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों के लगभग 3 लाख से ज्यादा मामले दर्ज होते हैं, जिनमें छेड़छाड़ मार-पीट, अपहरण, दहेज उत्पीड़न से लेकर बलात्कार एवं मृत्यु तक के मामले शामिल हैं।

उपर्युक्त महिला संबंधित अपराधों को रोकने, उनसे निपटने तथा उन अपराधों से महिलाओं के संरक्षण के लिए बनाए गए कानून निम्नलिखित हैं: सर्वप्रथम वर्ष 1950 में भारतीय संविधान में बच्चों एवं महिलाओं की सुरक्षा पर ध्यान दिया गया। भारतीय संविधान राज्य को यह अधिकार देता है, कि वह स्त्रियों और बालकों के कल्याण के लिए विशेष उपाय कर सकता है।

भारतीय दंड संहिता 1860 भारतीय दंड संहिता (आई.पी.सी) 1860 एक व्यापक कानून है जो भारत में आपराधिक कानून के वास्तविक पहलुओं को शामिल करता है। यह भारत के किसी भी नागरिक द्वारा किये गए अपराधों के बारे में बताता है एवं उनमें से प्रत्येक के लिए सजा और जुर्माना बताता है। भारतीय दंड संहिता पूरे भारत में लागू है।

भारतीय दंड संहिता की धारा 354 के अनुसार - स्त्री की लज्जा भंग करने के आशय से उस पर हमला या आपराधिक बल का प्रयोग, धारा 354 – A - यौन उत्पीड़न के लिए सजा, धारा 354 B. बल पूर्वक या हमले द्वारा किसी स्त्री को नग्न करना या नग्न होने के लिए विवश करना, धारा 354 C ताक - झाक करना, धारा 354 D पीछा करना एवं धारा 509 - शब्द, अंगविक्षेप या कार्य जो किसी स्त्री की लज्जा का अनादर करने के लिए आशयित है।

प्रावधान –

1 से 7 वर्ष तक कारावास, आर्थिक दंड या दोनों से यह एक गैर-जमानती, संज्ञेय अपराध है और किसी भी मजिस्ट्रेट द्वारा विचारणीय है। यह अपराध समझौता करने योग्य नहीं है।
इसका उद्देश्य महिलाओं की सुरक्षा एवं गरिमा को सुरक्षित करना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हिन्दुस्तान जिंक लि देवारी (उदयपुर) में यह केन्द्र सरकार का उपक्रम है ।
- हिन्दुस्तान कॉपर लि . खेतडी (झुंझुनूं) में यह केन्द्र सरकार का उपक्रम है ।
- राजस्थान टेलीफोन लि. भिवाडी (अलवर) में है।
- हाईटेंशन इंसूलेटर्स ' आबू रोड़ (सिरोही) में है ।
- अरावली स्वचालित वाहन लि. अलवर जिलें में है।
- लैलेण्ड ट्रक कारखाना अलवर जिलें में स्थित है।
- 'लोको एवं कैरिज कारखाना' अजमेर में है । इसमें वेगन मरम्मत व मालगाड़ी के वेगनों का निर्माण होता है ।
- देश का प्रथम लोको इंजन इसी कारखाने में बनाया गया था ।
- 'वेगन इण्डस्ट्रीज' कोटा मे है । इसमें ब्रॉडगेज के वेगन बनाये जाते है ।

रेशम उद्योग

- भारत में रेशम कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु तथा जम्मू-कश्मीर में होता है।
- टसर खेती को राजस्थान में टसर खेती कोटा तथा उदयपुर में होती है।
- राजस्थान में रेशम उत्पादन के लिए टसर कृषि की जाती
- **रेशम की खेती के प्रकार-**

1. मुरबेरी
2. एरी
3. टसर
4. मूंगा

अध्याय – 4

अभिवृद्धि, विकास एवं नियोजन

पंचवर्षीय योजनाएं

पहली पंचवर्षीय योजना 1951-1956 (हेराल्ड-डोमर पर आधारित)

दोस्तों देश में पहली पंचवर्षीय योजना पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा शुरू की गयी। यह 8 दिसंबर 1951 को संसद में नेहरू जी द्वारा प्रस्तुत की गयी। पहली पंचवर्षीय योजना देश में रहने वाले सभी नागरिको के लिए आजादी के बाद एक ख़ुशी की लहर लेकर आने वाली थी। इस योजना के अंतर्गत कृषि विकास पर ज्यादा ध्यान आकर्षित किया गया,क्यूंकि उस समय देश में अनाज की कमी को लेकर सभी चिंतित थे। इसके साथ-साथ बाँध,भाखडा नांगल बांध और हीराकुंड बांध बनाने व सिंचाई को भी महत्तवपूर्ण उद्देश्य में जोड़ा गया। सरकार द्वारा इसका लक्ष्य 2.1% रखा गया लेकिन इसकी वृद्धि 3.6% हुई। जो कृषि विकास हेतु बहुत जरुरी थी। यह सबसे सफल योजना साबित हुई क्यूंकि इसकी शुरुवात देश की आज़ादी के बाद की गयी जो की देश के लिए एक नयी शुरुवात थी।

योजना के तहत किये गए मुख्य उद्देश्य एवं कार्य

- कृषि विकास को पहली प्राथमिकता दी गयी, जिससे देश के किसानो की आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सके ।
- बाँध बनाने व सिंचाई के कार्य की शुरुवात की गयी।
- सभी शरणार्थियो को रहने के लिए पुनः जगह दी गयी।
- देश के नागरिको के हित के लिए सभी तरह के विकास हेतु योजनाओं को बनाने की शुरुवात होने लगी।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना

द्वितीय पंचवर्षीय योजना 1956-1961 पी० सी० महालनोबिस मॉडल पर आधारित

पहली पंचवर्षीय योजना का कार्यकाल समाप्त होने के बाद, सरकार दूसरी पंचवर्षीय योजना की

शुरुवात की गयी।जिसका मुख्य उद्देश्य उद्योग (INDUSTRIES) पर किया गया। घरेलु उत्पादन से औद्योगिक उत्पाद का विकास इसके प्रमुख कार्य थे। इस योजना के अंतर्गत भिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला जैसे स्टील प्लांट मिल शहरों में पनबिजली (HYDROPOWER) और भारी परियोजनाओं (HEAVY PROJECTS) को स्थापित किया गया। जो की देश के विकास हेतु बहुत महत्वपूर्ण कदम था।

योजना के तहत किये गए मुख्य उद्देश्य एवं कार्य

- औद्योगिक उत्पाद का विकास को प्राथमिकता दी गयी
- उद्योग बनाने हेतु योजना तैयार की गयी
- 1957 में छात्रवृति का आरम्भ शुरू किया गया, जिससे छात्रों को पढ़ने हेतु सहायता मिल सके।
- कोयले की उत्पादन को और अधिक बढ़ा दिया गया था
- ऐसे शहर जहाँ स्टील प्लांट स्थापित किये जाते हैं, वहां हाइड्रोपावर और हैवी प्रोजेक्टस को स्थापित करने की मंजूरी दी गयी

तीसरी पंचवर्षीय योजना 1961-1966 (जॉन सैण्डी तथा सुखमय चक्रवर्ती मॉडल पर आधारित)

इसे गाडगिल योजना भी कहा जाता है तीसरी योजना का मुख्य उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था को गतिशील और नागरिको को आत्मनिर्भर बनाना था। तीसरी पंचवर्षीय योजना के समय 1962 में भारत और चीन के बीच युद्ध हुआ, इसके बाद 1965 में भारत-पाकिस्तान का युद्ध हुआ। जिससे देश की आर्थिक व्यवस्ता को बहुत नुक्सान हुआ जिसके कारण इस योजना का उद्देश्य पूरा नहीं हो सका। परन्तु फिर भी कई कार्य को जारी रखा गया जैसे: कृषि हेतु विकास का कार्य, बाँध बनाने का निर्माण कार्य, योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए स्कूल बनाने का कार्य शुरू हुआ। राज्यों में विकास सम्बंधित हेतु कार्यो की जिम्मेदारी सौंपी गयी। हरित क्रांति की शुरुआत इसी योजना के समय हुई थी। सरकार द्वारा इसका लक्ष्य 5.6% रखा गया था, लेकिन इसकी वृद्धि केवल 2.84% हुई।

योजना के तहत किये गए मुख्य उद्देश्य एवं कार्य

- कृषि और गेहूँ के उत्पादन के कार्य को बढ़ावा देना था
- ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूलों का निर्माण करने का कार्य किया गया
- बाँध व सिंचाई का कार्य जारी चलता रहा
- सीमेंट और केमिकल फ़र्टिलाइज़र का उत्पादन किया गया
- पंजाब में अधिक मात्रा में गेहूँ का उत्पादन शुरू किया गया

महत्तवपूर्ण जानकारी:

- आपको हम यह भी बता देते है कि तीसरी योजना का कार्यकाल समाप्त होने के बाद, 1967-1969 तक कोई भी नयी पंचवर्षीय योजना सरकार द्वारा नहीं बनायीं गयी; जिसे plan holiday का नाम दिया गया ।
- **चौथी पंचवर्षीय योजना 1969-1974 (अशोक रुद्र व ए० एस० मान्ने मॉडल पर आधारित)**
- चौथी पंचवर्षीय योजना के समय हमारे देश में भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी बनी। जिसके बाद पंचवर्षीय योजना का नेतृत्व इंदिरा गाँधी ने संभाल लिया था। इंदिरा गाँधी जी की सरकार ने देश के 14 भारतीय बैंको को राष्ट्रीकृत बनाया, इसके अलावा 1971 में हो रहे चुनाव के दौरान उन्होंने गरीबी हटाओ का नारा भी दिया। इस योजना की प्लानिंग योजना आयोग के उपाध्यक्ष डी.पी गाडगिल ने तैयार की। हरित क्रांति की शुरुवात से कृषि उत्पादन हेतु कार्य किये गए। सरकार द्वारा इसका लक्ष्य 5.7% रखा गया था, लेकिन इसकी वृद्धि केवल 3.3% हुई।यह पंचवर्षीय योजना असफल रही ।

योजना के तहत किये गए मुख्य उद्देश्य एवं कार्य

- दृढ़ता के साथ देश का आर्थिक विकास योजना की प्राथमिक थी ।
- ISRO की स्थापना भी इसी योजना के दौरान हुई ।
- योजना के तहत पिछड़े हुए क्षेत्रों में उद्योग (INDUSTRIES) स्थापित कराई गयी , जिससे उन क्षेत्रों का विकास निश्चित था ।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/2iclos

Online order - https://bit.ly/asi-woman

Call करें - 9887809083